हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 6 जुलाई 2025

11 किशोर-किशोरी मेले व पीटीएम का आयोजन

12 टेलेंट हंट में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

खबर संक्षेप

कैबिनेट मंत्री श्याम सिंह राणा आज शहर में

झज्जर। रविवार को हरियाणा सरकार में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्याम सिंह राणा झज्जर दौरे पर रहेंगे। कैबिनेट मंत्री भाजपा जिला कार्यालय में आयोजित कार्यालय में बतौर मुख्यातिथि शिरकत करेंगे। इस मौके पर पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम में पार्टी की आगामी रणनीतियों पर मंथन भी किया जाएगा।

अवैध हथियार सहित युवक गिरफ्तार

बहादुरगढ़। पुलिस की अपराध जांच शाखा प्रथम ने अवैध हथियार सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ बादली थाने में केस दर्ज किया गया है। उसे अदालत में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। सीआईए प्रभारी सुनील कुमार के अनुसार, उन्हें सूचना मिली थी कि गुरुग्राम के निवासी हिमांशु के पास अवैध हथियार है। वह फिलहाल बादली केएमपी फ्लाईओवर के नीचे है और बाढ़सा जाने की फिराक में है। इस सूचना पर टीम वहां गई और उसे काबू किया। आरोपी के पास एक अवैध पिस्तौल बरामद हुई है। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि अवैध कामों में लिप्त लोगों को जिले में सहन नहीं किया जाएगा।

गोरैया साइट पर आज लगाए जाएंगे पौधे

बहादुरगढ़। इलाके में बढ़ते प्रदूषण के बीच कुछ संस्थाएं हरियाली को बढ़ावा देने पर जोर दे रही हैं। क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट की ओर से बहादुरगढ़ इलाके में पिछले कुछ वर्षों से इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य किया गया है। कई मिनी जंगल व पार्क विकसित किए हैं। अब क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट और संघर्षशील जनकल्याण सेवा समिति की ओर से गोरैया ग्रीन बेल्ट को मिनी जंगल के रूप में तब्दील किया जा रहा है। यहां लगातार पौधे लगाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में रविवार छह जुलाई को काफी संख्या में पौधे लगाए जाएंगे। एल एंड टी कंपनी, संग निरकारी सत्संग भवन सहित कुछ अन्य संस्थाएं भी इसमें सहयोग करेंगी।

सैनिक नगर की गलियों में भरा सीवर का दूषित पानी, बदबू से सांस लेना भी मुश्किल

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

■ मुख्य गली और एप्रोच गली से निकलना हुआ दूभर ■ बीमारियां फैलने का खतरा

शहर के सैनिक नगर की गलियों में सीवर का दूषित पानी जमा होने से लोगों को परेशानी हो रही है। लोगों का कहना है कि कई बार संबंधित विभाग के अधिकारियों से समस्या के समाधान की मांग की, लेकिन अधिकारी सुनवाई नहीं कर रहे हैं। इससे लोगों की समस्या कम होने के बजाय बढ़ती जा रही है।

सीवर का पानी सैनिक नगर के लोगों के लिए परेशानी का सबब बन गया है। मुख्य व साइड की गलियों में सीवर का पानी भरने से लोगों का निकलना मुश्किल हो गया है। स्थानीय निवासी नरेंद्र सिंह, रोहताश, महेश, मनोज शर्मा, अशोक, अजीत सिंह और रामफल ने बताया कि कॉलोनी में पानी की निकासी की उचित व्यवस्था नहीं है। गंदा पानी जमा होने से गर्मी में कॉलोनी में बीमारी फैलने का खतरा भी बना हुआ है। इस गंदे पानी से उठती बदबू से सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। गली में से आना-जाना भी कठिन हो गया है। यहां मुख्य गली और एप्रोच गली में सीवर ओवरफ्लो की समस्या कई दिनों से बनी हुई है।

बहादुरगढ़। सैनिक नगर की मेन गली में भरा सीवर का पानी।

बहादुरगढ़। सीवर के पानी से अवरुद्ध सैनिक नगर की साइड गली।

लोग बोले-लंबे समय से हो रहे परेशान

ममता, निर्मला, रेनू, संतोष, नीलम व दर्शना ने बताया कि सैनिक नगर में सीवर ओवरफ्लो की समस्या आज से नहीं, बल्कि काफी समय है। बरसात में यह समस्या कहीं ज्यादा बढ़ जाती है। गंदे पानी में मक्खी-मच्छर पनपने से बीमारी फैलने का खतरा बना हुआ है। सीवर ओवरफ्लो की समस्या तो कॉलोनी की कई गलियों में है। जिससे उन्हें परेशनी उठानी पड़ रही है।

बामड़ोली में मकान के बाहर फायरिंग, केस

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

गांव बामड़ोली में एक मकान के बाहर फायरिंग किए जाने का मामला सामने आया है। गांव के ही एक युवक पर आरोप है। शिकायत के आधार पर लाइनपार थाने में आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया गया है।घटनाक्रम शुक्रवार रात करीब दो बजे हुआ। शिकायत में बामड़ोली के निवासी विपिन ने कहा है कि रात को हमारे घर के पास गांव के एक युवक ने दहशत फैलाने के मकसद से हवाई फायरिंग की।

स्कॉर्पियो में भागे

इसके बाद अपनी स्कॉर्पियो में सवार होकर बहादुरगढ़ की तरफ भाग गया। बताते हैं कि इस वारदात के बाद पीड़ित परिवार की ओर से डायल-112 पर कॉल कर दी गई थी। जिसके बाद इलाके की पुलिस हरकत में आई और लाइनपार क्षेत्र में ईआरवी टीम ने आरोपी युवक को गाड़ी व हथियार सहित काबू कर लिया गया। शनिवार को दोनों पक्षों के लोग थाने में पहुंचे थे। दोपहर बाद इस संबंध में आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया। आरोपी युवक का नाम अभिषेक बताया जा रहा है। चर्चा है कि कुछ दिन पहले अभिषेक का विपिन के पिता के साथ विवाद हो गया था। संभवतः उसी विवाद की रंजिश में हवाई फायरिंग की गई।

ये बोले थाना प्रभारी

लाइनपार थाना प्रभारी सुनील कुमार का कहना है कि रात को बामड़ोली में फायरिंग की सूचना मिली थी। इस संबंध में शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। जल्द ही मामले का खुलासा कर आरोपियों को गिरफ्तार करेंगे।

पदक विजेता मोहित का किया भव्य अभिनंदन

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

वर्ल्ड मिलिट्री कुश्ती चैंपियनशिप में मोहित ने जीता कांस्य पदक

वर्ल्ड मिलिट्री कुश्ती चैंपियनशिप में मेडल जीतने वाले मोहित पहलवान का बुपनिया स्थित जयवीर अखाड़े में अभिनंदन किया गया। कोच और कुश्ती प्रेमियों ने पदक विजेता का सम्मान करते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

दरअसल, जर्मनी में 22 से 29 जून तक 38वीं वर्ल्ड मिलिट्री कुश्ती चैंपियनशिप आयोजित हुई थी। तमाम देशों की सेनाओं से जुड़े पहलवानों ने इसमें भाग लिया। झज्जर जिले के मोहित पहलवान ने भी भारतीय सेना की ओर से भाग लेते हुए 65 केजी फ्री स्टाइल में देश के लिए कांस्य पदक जीता। उसकी जीत से कोच, परिजन व साथी पहलवान खुश थे। अखाड़े में पहुंचने पर उसका जोरदार स्वागत किया गया। कोच जयवीर, जीते प्रधान, कोच नवीन, मनु, संजीत, विजय, खालसा, रणधीर, संदीप व बिजेंद्र पहलवान आदि ने मोहित को जीत की बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कोच जयवीर ने बताया कि मोहित झज्जर जिले के गांव रुड़ियावास से है।

पिछले कुछ वर्षों से उनके पास प्रेक्टिस कर रहा है। विश्व स्तर पर लगातार मेडल जीतकर देश का नाम रोशन कर रहा है। वह वर्ल्ड चैंपियनशिप और एशिया चैंपियनशिप में भी मेडल हासिल कर चुका है। मोहित बेहद होनहार है। उसका सपना ओलंपिक में देश के लिए मेडल जीतना है। यकीनन वह आने वाले समय में उनके इस सपने को पूरा करेगा।

जीरो पीरियड में खेलते समय चक्कर आने से बिगड़ी छात्र की तबीयत, मौत

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

स्कूल में खेलते समय संदिग्ध परिस्थितयों में एक विद्यार्थी की मौत हो गई। विद्यार्थी चरखी दादरी जिले के इमलौटा में एक निजी स्कूल का छात्र था। मृतक की पहचान रोहतक जिले के पिलाना गांव निवासी करीब तेरह वर्षीय लक्ष्य पुत्र भूप सिंह के तौर पर हुई है। लक्ष्य आठवीं कक्षा का छात्र था। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार लक्ष्य सुबह स्कूल पहुंचा था। प्रार्थना शुरू होने से पहले वह जीरो पीरियड के दौरान खेल रहा था। जब प्रार्थना के लिए घंटी बजी तो उसने प्रार्थना स्थल के लिए दौड़ लगाई। लेकिन चक्कर आने के कारण वह जमीन पर गिर गया। इसके बाद स्कूल के शिक्षक उसे उपचार के लिए गांव के ही एक निजी अस्पताल ले गए। जहां चिकित्सकों ने लक्ष्य की गंभीर हालत को देखते हुए उसे रैफर कर दिया।

- चरखी दादरी के एक निजी स्कूल में आठवीं कक्षा का छात्र था लक्ष्य
- पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल पहुंचाया

झज्जर। छात्र की मौत के बाद नागरिक अस्पताल में उपस्थित परिजन।

स्कूल का स्टॉफ व परिजन लक्ष्य को लेकर निजी अस्पताल में पहुंचे

इस दौरान परिजनों को भी सूचित किया गया तथा स्कूल स्टॉफ सदस्य व परिजन लक्ष्य को शहर के एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर पुलिस ने अस्पताल पहुंच कर परिजनों से मामले की जानकारी लेते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल के शवगृह भिजवाया। मामले के जांच अधिकारी शक्ति ने बताया कि मृतक के पिता भूप सिंह के बयान पर फिलहाल इतिफाकिया कार्रवाई अमल में लाई गई है। मौत के वास्तविक कारणों का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही चल पाएगा। इस संबंध में पुलिस द्वारा नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है

लोहारू फीडर से महिला का शव बरामद, शिनाख्त नहीं हो पाई

झज्जर। क्षेत्र के गांव बाकरा से गुजरने वाली लोहारू फीडर में एक महिला का शव मिला है। ग्रामीणों को जब शव का पता चला तो उन्होंने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर ग्रामीणों की सहायता से शव को पानी से बाहर निकलवाकर उसे पोस्टमार्टम के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल के शवगृह भिजवाया। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार शव गली-सड़ी अवस्था में है। मृतका की करीब साठ वर्ष आंकी जा रही है। मामले के जांच अधिकारी गोपाल दास ने बताया कि मृतका की शिनाख्त न होने के कारण शव को आगामी 72 घंटे के लिए अस्पताल में बने शवगृह में रखवाया गया है। पुलिस द्वारा शव की शिनाख्त के प्रयास किए जा रहे हैं।

करंट की चपेट में आने से मोर की मौत

बहादुरगढ़। शहर के सेक्टर-9ए में शनिवार को विद्युत प्रवाह की चपेट में आ जाने से एक मोर घायल हो गया और उसकी मौत हो गई। करंट लगने से बुरी तरह जख्मी हुए मोर ने दम तोड़ दिया। दुर्घटना की सूचना मिलने पर पुलिस भी मौके पर पहुंची। दीपक प्रधान ने राष्ट्रीय सम्मान के साथ राष्ट्रीय पक्षी मोर की अंत्येष्टि की।

बहादुरगढ़। मोर की अंत्येष्टि के लिए जाते दीपक प्रधान व अन्य।

हरे पेड़ काटने से सुनसान दिखने लगा शहर का शहीदी पार्क, लोगों की भावनाएं आहत

■ बुजुर्ग बोले- पूरा पार्क ही उजाड़ दिया, देखने मात्र से ही आंखों में आंसू आ रहे ■ आरोपियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

बीतें दिनों शहर के ऐतिहासिक शहीदी पार्क से काटे गए हरे भरे पेड़ों को लेकर पार्क में घूमने आने वाले लोग काफी आहत है। लोगों का कहना है कि जिन पेड़ों को देखकर मन खुश होता था और जिनके नीचे बैठकर योगाभ्यास करते थे, वहीं अब पेड़ नहीं दिखने से दुख होता है। एक बुजुर्ग ने कहा कि पूरा पार्क ही उजाड़ दिया, देखने मात्र से ही आंखों में आंसू आ जाते है। वहीं पार्क में घूम रही एक महिला ने कहा कि पार्कों की सुंदरता पेड़ पौधों से होती है, जब पेड़ पौधे ही नहीं होंगे तो घर की छत पर ही ना घूम लेंगे। इतनी दूर आने का क्या फायदा। महिला ने कहा कि गर्मियों की छुट्टियों के दौरान बच्चों के साथ आने की इस पार्क में शुरूआत की। बड़ा परिसर, हरे भरे पेड़ों के बीच घूमने का आनंद ही कुछ और था। अब बच्चों के स्कूल खुलने के बाद शनिवार जब आना हुआ देखा तो पूरा मंजर ही बदला हुआ था। बड़े बड़े पेड़ कटे हुए थे। जिसको देखकर दुख हुआ। हालांकि महिला ने खुलकर अपनी राय रखी, लेकिन नाम और फोटो प्रकाशित करने पर मना कर दिया। यहीं नहीं एक बुजुर्ग ने कहा कि जब पेड़ काटे जा रहे थे तो उन्होंने पेड़ काटने से मना भी किया। लेकिन पेड़ काट रहे लोगों ने विभाग से अनुमति होने की बात कह दी। जिसको लेकर सभी चुप हो गए। उन्होंने कहा कि बिना बड़े बड़े पेड़ कटने से पार्क वीरान सा हो गया है, पार्क में आने का भी मन नहीं करता। वहीं पार्क में मौजूद कुछ लोगों ने यह भी कहा कि रातों रात यह कार्य हुआ है। जिसको लेकर हमने चरचा की है। शिकायत लिखी जा चुकी है। जल्द ही समाधान शिविर में डीसी के माध्यम से शिकायत दी जाएगी।

झज्जर। शहर के शहीदी पार्क में काटे गए हरे भरे पेड़। फाईल फोटो।

झज्जर। शहर के शहीदी पार्क में कटर से काटा गया भारी भरकम पेड़।

पार्षदों ने राष्ट्रपति, पीएम के नाम दे रखीं है शिकायत

महामहिम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री भारत सरकार, सीएम हरियाणा सरकार, वन मंत्री हरियाणा सरकार, उपायुक्त झज्जर, सीपी झज्जर, एसडीएम झज्जर, डीएमसी झज्जर, ईओ नगर परिषद झज्जर के नाम भेजी शिकायत में बताया गया है कि शहर के दिल्ली रोड़ स्थित ऐतिहासिक शहीदी पार्क से करीब दस से ज्यादा हरे भरे और बड़े पेड़ों को अवैध रुप से काट दिया गया। साथ ही उन पेड़ों से एकत्रित हुई लकड़ियों को काटने के बाद दो ट्रालियों में भरकर एक आरा मशीन में भेज दिया गया। दिन दहाड़े हुए इस कृत्य से जहां पर्यावरण प्रेमियों के हृदय को भारी आघात पहुंचा है। वहीं, यह स्पष्ट नहीं है कि आखिरकार किसके इशारे पर किसने इतनी बड़ी लापरवाही की है। ऐसे में उन्हें भी सुरक्षित किया जाए और प्रयास हो कि भविष्य में इस पार्क से एक भी पेड़ नहीं कटें। शिकायत पर वार्ड पार्षद जयपाल सिंह, वार्ड पार्षद किशोर सैनी, वार्ड पार्षद शशि बाला, पार्षद मंजू बाला सहित अन्य प्रबुद्धजनों के हस्ताक्षर है।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
JHAJJAR (DELHI-NCR)
NAAC A GRADE
NBA ACCREDITED
B.TECH ME, ECE and MBA

Industry Oriented Curriculum
Degree Conferred by MDU, Rohtak
GITAM is among the BEST ENGINEERING INSTITUTES OF THE COUNTRY !
RANKED #19 in North India
RANKED #39 Pvt. Institutes in India
RANKED #41 Across India
RANKED #62 Placement Across India
Times Engineering Institute Ranking Survey-2025
GSAT 2025 MCQ based
GITAM SCHOLARSHIP -cum- ADMISSION TEST
13/07/2025 | 10:30 am Onwards
Free Registration at www.gangainstitute.com
Venue: GITAM, JHAJJAR (DELHI-NCR)
ADMISSIONS OPEN 2025-26
B.TECH | B.TECH (LEET)
CSE, CSE (DATA SC.), CSE (AI & ML)
ECE, MECHANICAL, ELECTRICAL, CIVIL
FIRE TECHNOLOGY AND SAFETY
FOR WORKING PROFESSIONALS
B.TECH (FIRE TECH. & SAFETY, CSE), M.TECH (CSE), MBA
M.TECH | MBA | BBA | MCA | BCA | B.ARCH | M.ARCH | B.ED | M.ED
For Admission Enquiry
8684000891 / 892 / 893 / 906 / 9654292946
www.gangainstitute.com
GANGA GROUP OF INSTITUTIONS
Approved by AICTE/UGC/NCTE/COA/MDU
GANGA INSTITUTE OF ARCHITECTURE & TOWN PLANNING (GIATP)
9654292905 / 9015115120 | www.architectureganga.com
GANGA INSTITUTE OF EDUCATION (GIE)
8684000916 | www.gangainstituteofeducation.com
Head Office: 4/12, East Punjabi Bagh, New Delhi +91-9654292902, 03, 04

निवेश मंत्रा बिजनेस डेस्क

- पहले अपना लक्ष्य तय करें और रिस्क क्षमता जांच लें
- आपका लक्ष्य लंबी अवधि का है, तो इक्विटी म्यूचुअल फंड बेहतर
- रिटायरमेंट में ज्यादा वक्त नहीं बचा है तो डेट फंड्स में निवेश सही

हर म्यूचुअल फंड का रिस्क लेवल अलग होता है। इक्विटी फंड ज्यादा उतार-चढ़ाव वाले होते हैं, जबकि डेट या हाइब्रिड फंड ज्यादा स्टेबल रिटर्न देते हैं। आपकी रिस्क लेने की क्षमता आपकी उम्र, आमदनी और वित्तीय जिम्मेदारियों के हिसाब से भी तय होती है। साथ ही यह भी सोचें कि आपको पैसों की जरूरत कितने समय बाद पड़ेगी। अगर आपका लक्ष्य कुछ साल दूर है, तो इक्विटी में निवेश कर सकते हैं, लेकिन शॉर्ट टर्म के लिए डेट या लिक्विड फंड ज्यादा अच्छे माने जाते हैं।

निवेश करने जा रहे हैं तो पल्ले 'गांठ' बांध लें ये बातें, अच्छी होगी कमाई

म्यूचुअल फंड निवेश का एक पॉपुलर और स्मार्ट तरीका बन चुका है। यह एक ऐसा ऑप्शन है, जिसमें छोटे निवेशकों को भी प्रोफेशनल मैनेजमेंट, डायवर्सिफिकेशन और फ्लेक्सिबिलिटी का फायदा मिल पाता है, लेकिन अपने लिए सही म्यूचुअल फंड का सेलेक्शन करते समय केवल पिछले रिटर्न को देखना ही काफी नहीं होता। सही फंड चुनने के लिए कुछ अहम बातों का ध्यान रखना जरूरी है ताकि निवेश से बेहतर रिटर्न मिले और रिस्क भी कंट्रोल में रहे। सबसे पहले अपनी रिस्क क्षमता को देखते हुए लक्ष्य तय करें। इसके बाद ही निवेश के इस समर में उतरे। अगर इन जरूरी बातों पर ध्यान नहीं दिया तो सही फंड चुनने में चूक हो सकती है और आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है।

अपना फाइनेंशियल गोल तय करें

सबसे पहले ये समझना जरूरी है कि आप निवेश क्यों कर रहे हैं। घर खरीदने के लिए, बच्चों की पढ़ाई के लिए, रिटायरमेंट प्लान करने के लिए या फिर एसेट्स बनाने के लिए। अगर आपका निवेश का लक्ष्य साफ होगा, तो आपके लिए यह तय करना भी आसान हो जाएगा कि आपके लिए किस तरह का फंड बेहतर रहेगा। मिसाल के तौर पर अगर आपका लक्ष्य लंबी अवधि का है, तो इक्विटी म्यूचुअल फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं, जबकि रिटायरमेंट में ज्यादा वक्त नहीं बचा है तो डेट फंड्स में निवेश करना सही हो सकता है.

रिस्क लेने की क्षमता और इनवेस्टमेंट होराइजन

हर म्यूचुअल फंड का रिस्क लेवल अलग होता है। इक्विटी फंड ज्यादा उतार-चढ़ाव वाले होते हैं, जबकि डेट या हाइब्रिड फंड ज्यादा स्टेबल रिटर्न देते हैं। आपकी रिस्क लेने की क्षमता आपकी उम्र, आमदनी और वित्तीय जिम्मेदारियों के हिसाब से भी तय होती है। साथ ही यह भी सोचें कि आपको पैसों की जरूरत कितने समय बाद पड़ेगी। अगर आपका लक्ष्य कुछ साल दूर है, तो इक्विटी में निवेश कर सकते हैं, लेकिन शॉर्ट टर्म के लिए डेट या लिक्विड फंड ज्यादा अच्छे माने जाते हैं।

म्यूचुअल फंड की कैटेगरी को समझें

म्यूचुअल फंड्स की कई कैटेगरी हैं। मिसाल के तौर पर इक्विटी, डेट, हाइब्रिड, इंडेक्स, सेक्टोरल, ईएलएसएस वगैरह। हर फंड कैटेगरी की खूबियां अलग-अलग होती हैं। इसलिए यह जानना जरूरी है कि कौन-सा फंड किस तरह की जरूरत के लिए बना है। फंड एक्टिव है या पैसिव, यह जानना भी जरूरी है, क्योंकि इससे निवेश की रणनीति बदल सकती है।

पिछला ट्रैक रिकॉर्ड जरूर चेक करें

म्यूचुअल फंड्स के पिछले रिटर्न भविष्य की गारंटी नहीं देते, लेकिन यह जरूर बताते हैं कि किसी फंड ने बाजार के अलग-अलग साइकल या हालात में कैसा प्रदर्शन किया है। किसी फंड के तीन, पांच और सात साल के औसत रिटर्न की तुलना स्कीम के बेंचमार्क इंडेक्स और कैटेगरी एवरेज से करने पर उसके प्रदर्शन का काफी-कुछ अंदाजा लगाया जा सकता है।

फंड का पोर्टफोलियो देखें

कोई फंड किन कंपनियों में निवेश कर रहा है, यह जानना भी जरूरी है। इससे पता चलता है कि फंड मैनेजर की इनवेस्टमेंट फिलॉसफी क्या है और यह आपके जोखिम प्रोफाइल से मेल खाती है या नहीं। मिसाल के तौर पर लार्ज कैप स्टॉक्स में ज्यादा निवेश करने वाले फंड, मिड कैप या स्मॉल कैप में ज्यादा इनवेस्ट करने वाली स्कीम के मुकाबले कम रिस्क वाले हो सकते हैं।

फंड मैनेजर का पिछला ट्रैक रिकॉर्ड

म्यूचुअल फंड्स में फंड मैनेजर की भूमिका बहुत अहम होती है। उनका अनुभव और ट्रैक रिकॉर्ड बताता है कि वे बाजार की चाल को कितना समझते हैं और निवेशकों के पैसों को संभालने में कितने माहिर हैं। यह भी देखें कि जिस फंड में आप निवेश करना चाहते हैं, उसके फंड मैनेजर कितने अनुभवी हैं।

निवेश के खर्च पर भी गौर करें

किसी फंड में निवेश करने पर कितना खर्च आता है, यह उसके एक्सपेंस रेशियो से पता चलता है. अगर यह ज्यादा है तो आपकी कमाई पर असर पड़ सकता है। एक्टिव फंड्स में यह रेशियो कुछ अधिक हो सकता है, लेकिन पैसिव या इंडेक्स फंड्स में इसे कम ही रहना चाहिए. साथ ही डायरेक्ट प्लान का एक्सपेंस रेशियो भी उसी स्कीम के रेगुलर प्लान से कम होता है।

एग्जिट लोड व लॉक-इन पीरियड को समझें

कुछ फंड्स में तय समय से पहले पैसे निकालने पर एग्जिट लोड लगता है। ईएलएसएस जैसे फंड में 3 साल का लॉक-इन पीरियड होता है। कुछ फंड्स में यह 5 साल भी हो सकता है। इसलिए निवेश से पहले यह जानना जरूरी है कि आप जरूर पड़ने पर अपने पैसे कितनी जल्दी निकाल सकते हैं और उसका खर्च कितना होगा।

टैक्स के असर को भी जानें

इक्विटी और डेट फंड्स पर टैक्स की दरें अलग-अलग होती हैं। लॉन्ग टर्म और शॉर्ट टर्म के टैक्स रेट भी अलग होते हैं। निवेश का फैसला करते समय टैक्स इम्पैक्ट को ध्यान में रखें ताकि नेट रिटर्न का सही कैलकुलेशन हो सके।

फंड हाउस का पुराना प्रदर्शन भी देखें

जिस एसेट मैनेजमेंट कंपनी से फंड जुड़ा है, उसकी क्रेडिबिलिटी और पिछले इतिहास को जानना भी जरूरी है। एक मजबूत और भरोसेमंद एएमसी आपके पैसों को बेहतर तरीके से मैनेज कर सकता है। म्यूचुअल फंड में निवेश से अच्छा रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए आंख बंद करके किसी भी फंड में पैसा न लगाएं। अपनी जरूरत, रिस्क लेने की क्षमता और इनवेस्टमेंट होराइजन को समझें और ऊपर बताए गए हर प्वाइंट को ध्यान में रखकर फैसला करें। अगर जरूरत हो तो किसी फाइनेंशियल एक्सपर्ट की सलाह भी लें।

पीपीएफ में निवेश से भी जुटा सकते हैं 1.50 करोड़, ट्रिपल 5 का फॉर्मूला आएगा काम

केंद्र सरकार ने निवेशकों खासतौर से सैलरीड क्लास के बीच पॉपुलर स्मॉल सेविंग्स पर ब्याज दरों में कोई बइलाव नहीं किया है। जुलाई से सितंबर 2025 तक के लिए पीपीएफ पर 7.1 फीसदी सालाना ब्याज मिलता रहेगा। पीपीएफ की मैच्योरिटी 15 साल होती है, यानी यह लंबी अवधि के निवेश पर फोकस करने वाली स्कीम है। फाइनेंशियल एडवाइजर भी इसे लंबी अवधि के लिए सुरक्षित स्कीम मानते हैं। इस स्कीम के जरिए आप कितना फंड जुटा सकते हैं। क्या 1 करोड़ या 1.50 करोड़। इसका जवाब है आपके द्वारा होल्ड किए जाने वाली अवधि। पब्लिक प्रोविडेंट फंड एक ऐसी सरकारी स्कीम है, जिसे लंबी अवधि की निवेश के लिए डिजाइन किया गया है। अगर इस सरकारी स्कीम में लंबी अवधि तक या पूरे नौकरी पीरियड तक निवेश बनाए रहें तो रिटायरमेंट पर यह सरप्राइज दे सकता है। अब सवाल है कि मैच्योरिटी 15 साल की है तो इसे 25 साल या 30 साल तक होल्ड करना कैसे संभव है। ऐसा संभव है, इसे संभव बनाता है इस स्कीम में एक्सटेंशन से जुड़ा नियम।

28 की उम्र में पीपीएफ अकाउंट शुरू करना और इसे 58 साल तक बनाए रखने का मतलब है कि आपने 15 साल की मैच्योरिटी के बाद 3 बार 5 साल के लिए यानी ट्रिपल 5 का फॉर्मूला अपनाकर इसमें निवेश जारी रखा।

पीपीएफ में निवेश के नियम

पीपीएफ की मैच्योरिटी वैसे तो 15 साल की है, लेकिन निवेशक चाहें तो इसे एक बार में 5 साल - 5 साल के लिए कितनी बार भी आगे बढ़ा सकते हैं। इस तरह से यह स्कीम पूरी नौकरी पीरियड में भी बनाए रखी जा सकती है। अगर आप एक्सटेंशन से जुड़े इस नियम का सही से फायदा उठाते हैं तो आपका भविष्य वित्तीय रूप से बहुत हद तक सुरक्षित हो सकता है। हमने यहां 28 साल से 58 साल तक यानी नौकरी के 30 साल निवेश पर कैलकुलेशन दिया है।

28 से 58 साल तक निवेश

28 की उम्र में पीपीएफ अकाउंट शुरू करना और इसे 58 साल तक बनाए रखने का मतलब है कि आपने 15 साल की मैच्योरिटी के बाद 3 बार 5 साल के लिए यानी ट्रिपल 5 का फॉर्मूला अपनाकर इसमें निवेश जारी रखा।

इसे ऐसे समझें

- एक फाइनेंशियल ईयर में जमा : 1.50 लाख रुपये
- ब्याज दर : 7.1 फीसदी सालाना
- 15 साल में कुल जमा : 22,50,000
- 15 साल बाद कुल फंड : 40,68,209
- 3 बार एक्सटेंड करने पर
- 30 साल में कुल जमा : 45,00,000
- 30 साल बाद कुल फंड : 1,54,50,911
- ब्याज का फायदा : 1,09,50,911 रुपये

पीपीएफ को एक्सटेंड करने पर क्या हैं फायदे?

यह बचत स्कीम एक्सटेंड करने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि आप अपने रिटायरमेंट तक इसके जरिए एक बड़ा कॉर्पस जो 1.50 करोड़ रुपये भी हो सकता है, तैयार कर सकते हैं। वहीं ईपीएफ अकाउंट से भी आपको रिटायरमेंट पर अच्छा खासा फंड मिलेगा। ऐसे में आपका बुढ़ापा पूरी तरह से टेंशन फ्री हो जाएगा।

क्लोजिंग बैलेंस पर 89,000 रुपये मंथली इनकम

यहां आपने 30 साल तक निवेश कर, रिटायरमेंट तक 1.50 करोड़ फंड जुटा लिया। अब इसी फंड से मंथली कमाई करना चाहते हैं तो इसे फिर एक्सटेंड कर फायदा उठा सकते हैं. अगर आप स्कीम को बिना कुछ निवेश किए 5 साल के लिए एक्सटेंड किया है तो आपको क्लोजिंग बैलेंस पर सालाना ब्याज मिलेगा। वहीं हर साल एक बार आप पूरी रकम का कितना फीसदी भी निकाल सकते हैं। यह 100 फीसदी तक हो सकता है। यहां 1.50 करोड़ रुपये के क्लोजिंग बैलेंस पर 7.1 फीसदी सालाना ब्याज मिलेगा। यह एक साल में 10,65,000 रुपये होगा. आप एक साल में एक बार में इस पूरी ब्याज की रकम को निकाल सकते हैं। इसे 12 महीनों में बांट दें तो करीब 88,750 रुपये महीना होगा. वहीं इस निकासी पर कोई टैक्स भी नहीं लगेगा।

क्या है पीपीएफ

- पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड) एक प्रकार की बचत योजना है जो भारत सरकार द्वारा संचालित की जाती है। यह योजना व्यक्तियों को अपने भविष्य के लिए बचत करने और कर लाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है।
- लंबी अवधि की बचतः पीपीएफ एक लंबी अवधि की बचत योजना है जिसमें निवेश की अवधि 15 वर्ष होती है।
- कर लाभः पीपीएफ में निवेश करने से आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत कर लाभ प्राप्त होता है।
- निश्चित ब्याज दरः पीपीएफ पर ब्याज दर सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है और यह दरें समय-समय पर बदलती रहती हैं।
- सुरक्षित निवेशः पीपीएफ एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकार का समर्थन होता है।

सोने में लौट रहा निवेशकों का भरोसा

गोल्ड ईटीएफ ने 5 वर्ष में दिया बड़ा मुनाफा

विकल्प बिजनेस डेस्क

अगर आपने पिछले 5 सालों में हर महीने सिर्फ 10,000 रुपये गोल्ड ईटीएफ में लगाए होते, तो आज आपकी रकम करीब 10 लाख हो चुकी होती! एक रिपोर्ट के मुताबिक, येलो कमोडिटी यानी गोल्ड पर बेस्ड ईटीएफ ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। उदाहरण के तौर पर, एलआईसी एमएफ गोल्ड ईटीएफ में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी से कुल 6 लाख रुपये का निवेश करके 5 साल में 9.93 लाख रुपये तक का फंड तैयार किया है। इस दौरान इसका एक्सआईआरआर 20.93% रहा। इगोवहीं, यूटीआई गोल्ड ईटीएफ ने भी 9.92 लाख का रिटर्न दिया, जिसमें एक्सआईआरआर 20.87% रहा। कुल मिलाकर, गोल्ड ईटीएफ ने यह दिखा दिया है कि अगर आप अनुशासित तरीके से एसआईपी करते हैं, तो आपको बेहतर रिटर्न मिल सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक मई 2025 में गोल्ड ईटीएफ में कुल 291 करोड़ रुपये का निवेश आया है। इससे पता चलता है कि गोल्ड में निवेशकों को भरोसा लौट रहा है।

सोना निवेश का भरासेमंद विकल्प

मई 2025 में गोल्ड ईटीएफ में 291 करोड़ की नया निवेश हुआ। एक्सपर्ट का मानना है कि सोने की मजबूत कीमत और दुनिया भर की अनिश्चितताओं के कारण निवेशकों का सोने में फिर से भरोसा बढ़ रहा है। इससे पता चलता है कि सोना अब भी एक सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का ऑप्शन बना हुआ है। जानकारों के मुताबिक निवेशक फिर से सोने पर भरोसा कर रहे हैं क्योंकि सोना शेयर और बॉन्ड बाजार की अस्थिरता के बीच एक सुरक्षित जगह माना जाता है। मई महीने में सोने की कीमतें ज्यादा बदल नहीं हुईं, जिससे निवेशकों के लिए यह सही समय था कि वे अपने पैसे सुरक्षित जगह लगाएं या अपने निवेश का संतुलन ठीक करें। इसलिए अब ज्यादा लोग सोने में निवेश कर रहे हैं।

क्या है गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ (एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो सोने की कीमतों को ट्रैक करता है। यह निवेशकों को सोने में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है बिना भौतिक सोना खरीदने की आवश्यकता के।

गोल्ड ईटीएफ के लाभ

- **सोने में निवेश :** गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को सोने में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है बिना भौतिक सोना खरीदने की आवश्यकता के।
- **विविधीकरण :** गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद कर सकता है।
- **लिक्विडिटी :** गोल्ड ईटीएफ में उच्च लिक्विडिटी होती है, जिससे निवेशक अपने निवेश को आसानी से बेच सकते हैं।
- **कम लागत :** गोल्ड ईटीएफ में निवेश करने की लागत कम होती है।

एसआईपी करने वालों के लिए खुशखबरी

■ 5 साल में गोल्ड ईटीएफ ने 10,000 मासिक एसआईपी को 10 लाख में बदला

■ एलआईसी, यूटीएल, और इनवेस्को जैसे फंड्स ने 20% से ज्यादा रिटर्न दिया

■ मई में गोल्ड ईटीएफ में 291 करोड़ का निवेश आया, दे रहा बढ़िया संकेत

गोल्ड ईटीएफ- 5 साल का परफॉर्मेंस

गोल्ड ईटीएफ	10,000 मंथली एसआईपी का वर्तमान वैल्यू जो 5 साल पहले शुरू किया था	एक्सआईआरआर (%)
एलआईसी	993,917.25	20.93
यूटीआई गोल्ड	992,677.42	20.87
इन्वेस्को इंडिया	991,639.77	20.83
एक्सिस	990,730.89	20.79
आईसीआईसीआई प्रू	990,214.31	20.77
आदित्य बिड़ला एसएल	988,839.31	20.71
एचडीएफसी	988,609.05	20.7
कोटक	988,529.52	20.7
एसबीआई	986,021.61	20.59
क्वांटम गोल्ड फंड	984,917.72	20.54
निप्पॉन इंडिया ईटीएफ गोल्ड बीईएस	983,924.09	20.5

गोल्ड ईटीएफ की विशेषताएं

- सोने की कीमतों को ट्रैक करना : गोल्ड ईटीएफ सोने की कीमतों को ट्रैक करता है, जिससे निवेशकों को सोने के मूल्य में परिवर्तन के अनुसार लाभ या हानि होती है।
- एक्सचेंज पर कारोबार : गोल्ड ईटीएफ शेयर बाजार में सूचीबद्ध होता है और इसका कारोबार शेयरों की तरह किया जा सकता है।
- लिक्विडिटी : गोल्ड ईटीएफ में उच्च लिक्विडिटी होती है, जिससे निवेशक अपने निवेश को आसानी से बेच सकते हैं।
- कम लागत : गोल्ड ईटीएफ में निवेश करने की लागत कम होती है क्योंकि इसमें भौतिक सोना खरीदने और रखने की आवश्यकता नहीं होती है।

स्वास्थ्य बीमा में ईएमआई के लाभ : कवरेज को और किफायती बनाएं

ईएमआई भुगतान विकल्प के साथ स्वास्थ्य बीमा खरीदना करना ज़्यादा सुविधाजनक ■ पॉलिसीधारक छोटी, ज़्यादा सुलभ किश्तों में प्रीमियम का भुगतान कर पाने में होते हैं सक्षम ■ मिलती है मासिक, त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक भुगतान माध्यम चुनने की सुविधा

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में, स्वास्थ्य समस्याएं और बढ़ते मेडिकल खर्चे व्यक्तियों और परिवारों दोनों के लिए एक आम समस्या बन गए हैं। हेल्थकेयर की बढ़ती लागत के चलते, बहुत से लोगों के लिए कॉमप्रिहेंसिव स्वास्थ्य बीमा कवरेज खरीदना पहले से ज़्यादा मुश्किल हो गया है। सुलभता और किफायत को बढ़ाने के लिए, इंश्योरेंस रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट ऑथोरिटी ऑफ इंडिया (आईआरडीएआई) ने 2019 में यह नियम बनाया कि बीमा प्रीमियम का भुगतान एकमुश्त करने के बजाय, बीमा कंपनियां पॉलिसीधारकों को ईएमआई (समान मासिक किश्तों) में प्रीमियम चुकाने का विकल्प दें। इससे लोगों के लिए अपने खर्चों को बजट में लाना आसान हो जाएगा और यह सुनिश्चित होगा है कि उनके पास अप्रत्याशित मेडिकल खर्चों से सुरक्षा के लिए निरंतर स्वास्थ्य कवरेज हो। ईएमआई भुगतान विकल्प के साथ स्वास्थ्य बीमा

जानकारी
भास्कर नेरुरकर

खरीदना करना ज़्यादा सुविधाजनक हो जाता है, जिससे पॉलिसीधारक छोटी, ज़्यादा सुलभ किश्तों में प्रीमियम का भुगतान कर पाते हैं।

ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा आपको एक बार में पूरी राशि का भुगतान करने के बजाय, मासिक, त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक भुगतान माध्यम चुनने की सुविधा देता है, जिससे अपना बजट बनाना आपके लिए आसान हो जाता है। उदाहरण के लिए, अगर आपका वार्षिक प्रीमियम 36,000 रुपये है, तो फाइनेंशियल बाधाओं की वजह से पूरी राशि का एकमुश्त भुगतान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। ईएमआई भुगतान के ज़रिए, आप 3,000 रुपये की 12 किश्तों में भुगतान करने का विकल्प चुन सकते हैं या पूरी राशि को त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक किश्तों में बांटकर भुगतान कर सकते हैं, जिससे आपको लगातार कवरेज भी मिलती है और आपकी फाइनेंशियल स्थिरता भी बनी रहती है। यह तरीका पॉलिसीधारकों को एक बार में बड़े खर्चों से बचने में मदद करता है, जिससे स्वास्थ्य बीमा प्राप्त करना और मैनेज करना आसान हो जाता है। ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा लेने से कई लाभ मिलते हैं, जो हेल्थकेयर कवरेज प्राप्त करना आसान और सुविधाजनक बनाते हैं. यहां कुछ प्रमुख लाभ दिए गए हैं।

उच्च कवरेज का एक्सेस

एक अच्छा स्वास्थ्य बीमा प्लान होना बहुत जरूरी है, लेकिन कई बार इसकी लागत आपके लिए चिंता का विषय हो सकती है। ईएमआई का विकल्प चुनकर, आप उच्च कवरेज वाले प्लान खरीद सकते हैं। जो कि विशेष रूप से हृदय रोग, कैंसर, किडनी फेलियर या न्यूरोलॉजिकल विकार जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने में मददगार होते हैं। इन बीमारियों का इलाज महंगा हो सकता है, जिसमें लंबे समय तक मेडिकल केयर, सर्जरी और महंगी दवाओं की आवश्यकता होती है। ईएमआई प्लान के साथ, आप उन गंभीर बीमारियों को कवर करने वाली बीमा पॉलिसी चुन सकते हैं, जिनके लिए एकमुश्त भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे कठिन समय में आपके और आपके परिवार के लिए फाइनेंशियल सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

सीनियर सिटीज़न और रिटायर हो चुके लोगों के लिए उपयुक्त

जैसे-जैसे व्यक्ति की आयु बढ़ती है, स्वास्थ्य बीमा और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, लेकिन आयु से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों के कारण कवरेज की लागत अधिक हो सकती है. सीनियर सिटीज़न और रिटायर हुए लोगों के लिए, बीमा के लिए बड़ी राशि का एकमुश्त भुगतान चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासतौर पर तब जब उनकी आय एक निश्चित राशि तक ही सीमित हो। ऐसी स्थिति में ईएमआई प्लान सहायक बन जाते हैं। सुविधाजनक भुगतान विकल्पों के साथ, वे सही पॉलिसी प्राप्त कर सकते हैं जो फाइनेंशियल स्थिरता बनाए रखते हुए उनके स्वास्थ्य की सुरक्षा करती है।

ज़्यादा किफायती

बीमा के लिए एक बड़ी राशि का भुगतान करना कभी-कभी आपकी जेब पर भारी पड़ सकता है। ऐसे में ईएमआई प्लान मददगार साबित होते हैं -वे खर्च को छोटे, आसान भुगतानों में बांटते हैं, जिससे हर किसी के लिए बीमा लेना ज़्यादा किफायती हो जाता है। वार्षिक प्रीमियम का एक बार में भुगतान करके परेशान होने की बजाय, आप आसान किश्तों में भुगतान कर सकते हैं, जिससे आपका आर्थिक दबाव कम हो सकता है। उदाहरण के लिए, कॉमप्रिहेंसिव पॉलिसी के लिए एक बार में 50,000 रुपये का भुगतान करने के बजाय, आप एक वर्ष के लिए प्रति माह लगभग 4,167 रुपये का भुगतान करने का विकल्प चुन सकते हैं।

परेशानियों को कम करते हैं ऑटोमैटिक भुगतान

कभी-कभी बीमा प्रीमियम का भुगतान करना मुश्किल हो सकता है, खासतौर पर जब आप जीवन में व्यस्त हो जाते हैं। इसलिए कई बीमा कंपनियां ईएमआई भुगतान के लिए ऑटो-डेबिट विकल्प प्रदान करती हैं, जिससे प्रीमियम का भुगतान करना आसान हो जाता है और यह सुनिश्चित होता है कि आपकी पॉलिसी जारी रहे. ऑटो-डेबिट सुविधा के साथ, आपकी चुनी गई आवृति, जैसे मासिक, तिमाही, अर्ध-वार्षिक या वार्षिक के आधार पर, आपका बीमा प्रीमियम ऑटोमैटिक रूप से आपके बैंक अकाउंट से काटा जाता है। यह सुविधा आपको भुगतान से चूकने से बचाती है और भुगतान में देरी की वजह से पॉलिसी समाप्त होने के जोखिम को खत्म करती है। इसके अलावा, यह आपको हर देय तिथि को याद रखने से भी बचाती है। इस विकल्प के साथ, आप बिना किसी फाइनेंशियल दबाव के लगातार कवरेज बनाए रख सकते हैं और हर समय सुरक्षित रह सकते हैं।

टैक्स लाभ : स्वास्थ्य बीमा न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है, बल्कि टैक्स लाभ भी प्रदान करता है, जो आपको पैसे बचाने में मदद कर सकता है। इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80डी के तहत, आप स्वास्थ्य बीमा के प्रीमियम पर खर्च किए गए पैसे पर कटौती का क्लेम कर सकते हैं। यह आपकी टैक्स योग्य आय को कम करता है, जिससे आपका देय टैक्स भी कम हो जाता है। स्वयं, पति/पत्नी, बच्चों और आश्रित माता-पिता के लिए चुकाए गए प्रीमियम पर यह कटौती लागू होती है। अगर आप प्रीमियम का भुगतान ईएमआई पर करना चुनते हैं, तो आपको टैक्स लाभ भी मिलेंगे और छोटे भुगतानों की सुविधा भी। टैक्स फाइल करते समय कटौती का क्लेम करने के लिए, सभी भुगतानों की रसीदें और पॉलिसी डॉक्यूमेंट को प्रमाण के रूप में ज़रूर रखें।

स्मार्ट और सुविधाजनक विकल्प : ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा उन व्यक्तियों और परिवारों के लिए एक स्मार्ट और सुविधाजनक विकल्प है, जो एक बार में बड़ी राशि का भुगतान किए बिना कॉमप्रिहेंसिव हेल्थकेयर कवरेज चाहते हैं। शुरुआत करने के लिए, अपनी हेल्थकेयर की आवश्यकताओं का आकलन करें और विभिन्न बीमा प्लान्स के बारे में जानें। नियम और शर्तों को समझें और अपने बजट के अनुसार भुगतान की आवृति चुनें। पता लगाएं कि क्या कोई अतिरिक्त शुल्क लग रहा है, पॉलिसी की कवरेज में क्या शामिल है और क्लेम कैसे करते हैं, ताकि बाद में कोई समस्या न हो। सही स्वास्थ्य बीमा प्लान और किफायती ईएमआई आपको लंबे समय के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा, फाइनेंशियल सुरक्षा और मन की शांति प्रदान करते हैं। याद रखें, आज सही विकल्प चुनने से आपको भविष्य में मेडिकल एमरजेंसी के दौरान फाइनेंशियल तनाव से बचने में मदद मिल सकती है।

(लेखक बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस के हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन टीम के हेड हैं।)

खबर संक्षेप

किसान के खेत से कृषि यंत्र व दवाइयां चोरी

सोनीपत। बहालगढ़ थाना क्षेत्र के गांव बसोदी में किसान के खेत से कृषि यंत्र व दवाइयां के चोरी होने का मामला सामने आया है। किसान ने मामले को लेकर पुलिस को शिकायत दी। पुलिस ने इस संबंध में विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है। गांव बसौदी निवासी बलबीर ने बताया कि वह खेतीबाड़ी का काम करता है। उसने अपने खेत में कमरा बना रखा है। कमरे के अंदर खाद, बीज व कृषि यंत्रों को रखता है। किसी ने कमरे में रखी हजारों रुपये कीमत की दवाइयां व कृषि यंत्रों को चोरी कर लिया।

दो पहिया वाहन चोरी के आरोपित गिरफ्तार

सोनीपत। बहालगढ़ थाना व सेक्टर-27 शहर थाना क्षेत्र में दोपहिया वाहन चोरी करने के आरोपितो को गिरफ्तार किया है। आरोपित राजा उर्फ राजू निवासी बागपत उत्तर प्रदेश व भारत निवासी फिरोजपुर सोनीपत का है। पुलिस ने आरोपितो को अदालत में पेश किया। जहां से दोनों को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। आरोपित राजा ने दो जुलाई को आकाश निवासी यूपी की बाइक को कंपनी की पार्किंग से चोरी किया था।

जीडी गोयंका स्कूल में साप्ताहिक वनमहोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

पांचवीं के विद्यार्थियों ने नुक्कड़ नाटक से दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

बहादुरगढ़। जीडी गोयंका के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए पोस्टर। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर की एचएल सिटी में स्थित जीडी गोयंका पब्लिक स्कूल में साप्ताहिक वनमहोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने पौधारोपण, नुक्कड़ नाटक तथा पोस्टर मेकिंग के माध्यम से अपनी सहभागिता दिखाई। प्राइमरी स्तर के विद्यार्थियों ने पौधारोपण किया और स्कूल प्रांगण में अनेक पौधे लगाए। पौधरोपण के समय छात्र अत्यधिक उत्साहित थे। पांचवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। उन्होंने अन्य छात्रों से कहा कि हमें पेड़ काटने पर रोक लगानी होगी। साथ ही सभी छात्रों को पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित किया। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों ने पोस्टर मेकिंग के द्वारा वन महोत्सव मनाया। स्कूल प्रधानाचार्या ने इन गतिविधियों के दौरान कहा कि यह केवल एक दिन का ही प्रयास नहीं है, बल्कि इसे सफल बनाने के लिए हमें निरंतर प्रयास करना होगा। जिस प्रकार से हम उत्साहित होकर विभिन्न प्रकार के पौधे लगा रहे हैं, हमें निरंतर इन पौधों की देखभाल भी करनी होगी। स्कूल निदेशिका शैलजा जून ने भी छात्रों के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह की गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक शिक्षा के साथ-साथ हमारे पर्यावरण एवं वातावरण को सुरक्षित रखना भी है।

बहादुरगढ़। पौधों को पानी देते महाराज कालिदास व अन्य। फोटो : हरिभूमि

लायंस क्लब की ओर से नालंदा पब्लिक स्कूल में लगाए पौधे

बहादुरगढ़। लायंस क्लब बहादुरगढ़ की ओर से नालंदा पब्लिक स्कूल में पौधरोपण कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कालिदास महाराज ने शिरकत की। उनके सानिध्य में स्कूल परिसर में कई पौधे लगाए गए। महाराज कालिदास ने लोगों को पौधरोपण का महत्व समझाया। क्लब प्रधान हेमंत सलूजा, सेक्रेट्री देवन शर्मा, सूबे सिंह, स्वर्णजीत बतरा, गुलशन, अरुण पाहूजा, हरिपक्राश सहित स्कूल स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

झज्जर। पर्यावरण सरंक्षण अभियान के अंतर्गत ग्रामीणों के साथ पौधरोपण करते हुए महंत राजेंद्र दास। फोटो : हरिभूमि

पर्यावरण संरक्षण के लिए संजीवनी हैं पेड़-पौधे: महंत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

जटेला धाम स्थित स्वामी नितानंद मिशन फाउंडेशन द्वारा चलाए जा रहे पौधरोपण अभियान के अंतर्गत क्षेत्र के गांव बहू व जमालपुर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जटेला धाम के महंत राजेंद्र दास ने पौधारोपण कार्यक्रम के दौरान अपने संबोधन में कहा कि पेड़-पौधे और वनस्पति पृथ्वी का श्रृंगार है। जब पृथ्वी वनस्पति और पेड़-पौधों से लदी हुई थी तो किसी प्रकार की बीमारी और महामारी का कोई प्रकोप नहीं था। ऋषि मुनियों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण अभियान सनातन शिक्षा का आवश्यक अंग बनाया था।

इसी कारण श्रावण के महीने में पौधारोपण करके वे पृथ्वी माता के कर्ज से समाज को उऋण करने की सीख देते थे। उसी सनातन परंपरा को आगे बढ़ाते हुए नितानंद मिशन फाउंडेशन ने पौधारोपण अभियान चलाया है जिसकी शुरूआत जटेला धाम से बीती बारह जून को सीएम नायब सिंह सैनी ने पर्यावरण महाकुंभ में की थी। एक पेड़ मां के नाम रोपित करके मां के ऋण से उऋण होने का यह अभियान पर्यावरण संरक्षण का सकारात्मक मिशन बन जाएगा। उन्होंने कहा कि पेड़-पौधे ऑक्सीजन के कारखाने हैं। इससे पर्यावरण को शुद्ध करने की संजीवनी मिलती है। इसके साथ-साथ पेड़ पौधे धरती माता की सेहत सुधारने में भी रामबाण की भूमिका अदा करते हैं। इस दौरान मातनहेल सरपंच प्रतिनिधि बिजेंद्र सुहाग, नसीब नंबरदार, विधानंद सुहाग, महिपाल, गुरदीप सुहाग, प्रिंसिपल कंवर, वाईस प्रिंसिपल सरोज बाला, पूनम सिन्हा, कृष्ण कूमार आदि ने भी पौधारोपण किया।

पुलिस टीम ने विद्यार्थियों को किया जागरूक

झज्जर। शनिवार को पुलिस की एक टीम द्वारा कस्बा बेरी में एक निजी स्कूल में विद्यार्थियों को यातायात नियमों की पालना करने व नशे के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक किया। इंस्पेक्टर सतीश कुमार ने विशेष रूप से सड़क सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, महिला सुरक्षा, नशा मुक्ति अभियान और नए आपराधिक कानूनों के बारे में विद्यार्थियों के साथ विस्तार से जानकारी साझा की। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि वे कैसे एक सतर्क, सजग एवं जिम्मेदार नागरिक बनकर समाज में सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930, साइबर क्राइम पोर्टल और संचार साथी पोर्टल के उपयोग के बारे में बताया ताकि वे ऑनलाइन धोखाधड़ी से सुरक्षित रह सकें। इस दौरान उन्होंने महिला सुरक्षा डायल 112, दुर्गा शक्ति ऐप, और ट्रिप मॉनिटरिंग सिस्टम के बारे में जानकारी दी तथा सार्वजनिक स्थलों पर सतर्कता बरतने की सलाह दी गई। उन्होंने नशा मुक्त अभियान के तहत विद्यार्थियों को बताया कि नशा व्यक्ति, परिवार और समाज के लिए कितना घातक है। उन्होंने कहा कि नशा संबंधित गतिविधियों की सूचना तुरंत पुलिस को दें।

सोनीपत। डीसीआरयूएसटी, मुरथल कुलगुरु के साथ पीएचडी के पात्र शोधार्थी।

डीसीआरयूएसटी के 17 शोधार्थी पीएचडी के पात्र घोषित किए

सोनीपत। दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल के कुलगुरु प्रो. श्रीप्रकाश सिंह ने परीक्षकों के बोर्ड तथा शोध समिति की अनुशंसा पर 17 विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि का पात्र घोषित किया है। उन्होंने पीएचडी के पात्र घोषित किए 17 शोधार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कुलगुरु प्रो. सिंह ने कहा कि शोध को बढावा देने के लिए विश्वविद्यालय प्रत्येक विभाग के दो शोधार्थियों को नियमानुसार 25 हजार रुपए मासिक स्कालरशिप दी जाएगी। इसके अतिरिक्त पीएचडी कर रहे प्रत्येक शोधार्थी को नियमानुसार 10 हजार रुपए आकस्मिक व्यय के लिए भी दिए जाएंगें। पीएचडी उपाधि के पात्र घोषित किए गए अभ्यर्थियों में कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग से कपिल सैनी व पुष्पा, मैनेजमेंट स्टडीज से सरिता यादव, विंकी रानी व सुरभी दहिया,मैकेनिकल इंजीनियरिंग से आशीष व फिजिक्स से सुप्रिया सहरावत, पूजा नेहरा व दीपक, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग से लोकेंद्र कुमार, सिविल इंजीनियरिंग से परमिंदर गिल, इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग से सर्वेश कुमार शर्मा, ललिता यादव व नीति, मैथमेटिक्स से कविता, बायोटेक्नोलॉजी से प्रिया व अमरेश कुमार शामिल हैं।

वन महोत्सवः छात्रों ने बनाए आकर्षक पोस्टर

झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल स्कूल भदाना में शनिवार को वन महोत्सव सप्ताह के उपलक्ष्य में पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में तीसरी से पांचवी कक्षा तक के विद्यार्थियों ने भाग लेते हुए अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से आयोजित इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर सुंदर और प्रेरणादायक पोस्टर तैयार किए। प्रतियोगिता परिणामों में तीसरी कक्षा से दक्ष, निकुंज व तनीषा ने प्रथम तथा देवांश द्वितीय, चौथी कक्षा में अद्विका ने पहला, दीपांशु व समर ने दूसरा तथा निशिता व खुशी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। पांचवीं कक्षा में नक्श व मानवी प्रथम, ईशान व सिया द्वितीय तथा चिराग व हिनल तृतीय रहे। विद्यालय निदेशक धर्मेंद्र जून ने विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए उन्हें इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

किशोर-किशोरी मेले में विद्यार्थियों ने नाटक का मंचन कर दिया लैंगिक समानता का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

■ रावमावि सिकंदरपुर में कार्यक्रम का आयोजन।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान नाटक की प्रस्तुति देते हुए ब्रेकथ्रू संस्था के कलाकार।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिकंदरपुर में शनिवार को किशोर-किशोरी मेले व पीटीएम का आयोजन किया गया। स्वयंसेवी संस्था ब्रेकथ्रू से आई टीम ने लैंगिक समानता पर एक शानदार नाटक की प्रस्तुति दी। पीटीएम में पहुंचे अभिभावकों, एमएससी सदस्यों व शिक्षकों ने नाटक की प्रस्तुति के लिए टीम की सराहना की। किशोर-किशोरी मेले का मुख्य उद्देश्य किशोर और किशोरियों को सशक्त बनाना उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाना रहा। अलावा बच्चों की एकाग्रता समाधान कौशल व रणनीतिक सोच को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विद्यार्थियों के बीच शतरंज प्रतियोगिता भी कराई गई। इसके बाद मेगा पेटीएम में शिक्षकों द्वारा अभिभावकों के साथ ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान विद्यार्थियों को दिए गए गृह कार्य तथा अवकाश के दौरान बच्चे द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियों बारे चर्चा की गई। पीटीएम के दौरान अभिभावकों के लिए कुछ मनोरंजक कार्यक्रम जैसे मटका दौड़, नींबू दौड़, म्यूजिकल चेयर आदि का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय प्राचार्य सतवीर सिंह ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन में रहने व अपने से बड़ों का आदर-सम्मान करने की भी सीख दी।

विद्यार्थियों के मनोरंजन व अभिभावकों के साथ बेहतर तालमेल के लिए प्रतियोगिता आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। पीटीएम में उपस्थित अभिभावकों के साथ चर्चा करते शिक्षक व बच्चों के साथ शतरंज खेलते हुए अध्यापक।

शनिवार को जिले के सभी 520 स्कूलों में निपुण पीटीएम का आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने बच्चों द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान किए गए गृहकार्य की रिपोर्ट शिक्षकों के समक्ष प्रस्तुत की। साथ ही उन्होंने अपने बच्चों की शैक्षिक और सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों की प्रगति पर चर्चा की। शिक्षकों ने अभिभावकों को बच्चों के गृहकार्य को समय पर पूरा करने में सहयोग करने की उनकी भूमिका और जिम्मेदारियों के बारे में बताया।

इसके अतिरिक्त, गतिविधि आधारित इस पीटीएम के साथ-साथ स्कूलों में शतरंज दिवस भी मनाया गया। इस दौरान छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों ने शतरंज प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। शतरंज के अलावा, मटका दौड़, नींबू-चम्मच दौड़, बोरी दौड़, रस्साकशी और म्यूजिकल चेयर जैसी विभिन्न गतिविधियों का भी आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य छात्रों का मनोरंजन और अभिभावकों के साथ बेहतर संबंध स्थापित करना रहा। इन गतिविधियों ने स्कूल परिसर में उत्सव का माहौल बनाया और सभी ने इसका भरपूर आनंद लिया।

जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार ने राजकीय वरिष्ठ एवं प्राथमिक विद्यालय भम्भेवा, डीघल और महराना का दौरा किया। जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार ने कहा कि शिक्षा विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप आयोजित यह पीटीएम अभिभावकों और शिक्षकों के बीच संवाद का एक मजबूत मंच साबित हुआ। स्कूलों में आयोजित सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों ने बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हमारा लक्ष्य बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ नैतिक और सामाजिक मूल्यों से भी जोड़ना है।

चौ. देवीलाल सहकारी चीनी मिल में लगाया रक्तदान शिविर

रक्तदान कर जरूरतमंद की बचाएं जानः अंकिता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

शनिवार को सहकारिता दिवस पर गांव आहुलाना स्थित चौ. देवीलाल सहकारी चीनी मिल में रक्तदान शिविर लगाया गया। शिविर का शुभारंभ मिल की एमडी अंकिता वर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि किया। विशिष्ट अतिथि सीएओ जितेंद्र शर्मा थे। एमडी ने कहा कि आज तक किसी फैक्ट्री में रक्त नहीं बन पाया है। जरूरत पड़ने पर एक मनुष्य का रक्त ही दूसरे को चढ़ाया जा सकता है। जिस रक्त को आमजन दान करते हैं उसी से ही हादसों में घायल या गंभीर बीमारियों से पीड़ित लोगों की जान बच पाती है। उन्होंने कहा कि हमें समय समय पर रक्तदान अवश्य करना चाहिए।

रक्तदान महादानः रक्त का दान महादान है,

■ आज तक किसी फैक्ट्री में रक्त नहीं बन पाया: वर्मा

जिसमें कोई स्वार्थ नहीं होता है। विशिष्ट अतिथि मिल के लेखा अधिकारी जितेंद्र शर्मा रहे। शिविर में 53 लोगों ने रक्तदान किया। मिल के एमडी वर्मा ने मिल द्वारा संचालित पेट्रोल पंप का निरीक्षण भी किया, जहां पर तेल का तौल सही मिला।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर विक्रय प्रबंधक धनीराम शर्मा, चीफ इंजीनियर अनिल चौहान, चीफ केमिस्ट सुरेंद्र खेरवाल, आरके सिंह, क्रय अधिकारी संदीप नरवाल, सहायक क्रय अधिकारी अनिल वर्मा व दिलबाग सैनी मौजूद रहे।

प्रकृति के संतुलन को पौधरोपण जरूरी

बैंक परिसर में पौधरोपण करते कार्यवाहक चेयरमैन एवं अन्य।

झज्जर। लघुसचिवालय स्थित दी झज्जर केंद्रीय सहकारी बैंक में शनिवार को वृक्षारोपण कार्यक्रम हुआ। बैंक के कार्यवाहक चेयरमैन राजबीर व निदेशक मंडल से जोगेंद्र माछरौली भी उपस्थित रहे। शुरुआत विकास अधिकारी प्रियव्रत द्वारा पौधरोपण कर की गई। उन्होंने कहा कि सहकारिता केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाने का भी माध्यम है। वृक्षारोपण एक नैतिक दायित्व है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य का आधार बनता है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने की दिशा में सहकारी संस्थाएं अहम भूमिका निभा रही हैं। जब हम एक पौधा लगाते हैं, तो वह समाज के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक बनता है। मीडिया प्रभारी पंडित लोकेश शर्मा ने बताया कि जिले की बीस बहुउददेशीय सहकारी समिति और शाखाओं में पौधारोपण हो चुका है और चार में रविवार को पूरा कर लिया जाएगा। इस अवसर पर सहायक प्रबंधक हरको बैंक राजेश नरवाल, मांगेराम, जीत सिंह, नीरज धनखड़, भरत सिंह, रामकुमार कटारिया, धनराज, अशोक कुमार, सुंदर सिंह, जितेंद्र सिंह, ईश्वर सिंह, अनूप गहलावत, आनंद प्रकाश, सुखबीर पूनिया, सचिन धनखड़, सीमा शर्मा, रेणु नांदल, पूजा यादव, रीना जाखड़, कुलदीप देशवाल सहित अन्य भी मौजूद रहे।

सार्वजनिक सूचना

मैं, अजीतपाल सिंह पुत्र श्री रण सिंह निवासी गांव मदाना कलां, तहसील बेरी, जिला झज्जर व हाल मकान नंबर-675, सेक्टर-6, बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा पुत्र हर्ष नारा और मेरी पत्नी पूनम रानी मेरे कहने सुनने से बाहर हैं और मैं उनसे अपने तमाम संबंध समाप्त करते हुए अपनी चल-अचल संपति से बेदखल करता हूं। उनके साथ किसी तरह का लेन-देन करने व व्यवहार रखने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। वे अपने हर कार्य के लिए स्वयं जिम्मेवार होंगे। मेरा व मेरे परिवार के सदस्यों का उनसे कोई संबंध व सरोकार नहीं रहा।

खबर संक्षेप

दूषित पेयजल आपूर्ति से बढ़ी परेशानी

बहादुरगढ़। शहर के वार्ड नंबर-24 की विभिन्न कालोनियों में कई दिन से दूषित पेयजल की सप्लाई हो रही है। स्थानीय निवासी यशपाल हिंदुस्तानी ने कहा कि सप्लाई में सीवरेज का गंदा पानी मिक्स होकर घरों में पहुंच रहा है। इसकी दुर्गंध पूरे घर में फैल जाती है। जिससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बबीता व हेमलता ने बताया कि दूषित पानी अन्य घरेलू कार्यों में भी प्रयोग नहीं किया जा सकता। दूषित जलापूर्ति के कारण बीमारी फैलने का खतरा है।

दूध का उत्पादन घटा और मांग बढ़ी

बहादुरगढ़। एक समय था जब हर घर में दूध के लिए कम से कम एक पशु पाला जाता था। मगर समय बदलने के साथ ग्रामीण इलाके में भी पशुधन लगातार घट रहा है। इसके साथ ही दूध उत्पादन भी कम हो रहा है, मगर इसकी मांग पहले से अधिक हो रही है। गर्मी में पशुओं का दूध कम हो जाता है, मगर मांग बरकरार रहती है। शहरी क्षेत्र में अपनी मांग व जरूरत को पूरा करने के लिए आमजन को पैकेज्ड मिल्क के साथ ही राजस्थानी बागड़ियों द्वारा पाली जा रही गायों के दूध पर निर्भर रहना पड़ रहा है।

गर्मी में बढ़ी बिजली की खपत, बिजली चोरों की पहचान व कार्रवाई में जुटा निगम

जून महीने में 40 बिजली चोरों पर लगाया 9.35 लाख का जुर्माना

पांचों उपमंडल अभियंताओं तथा कनिष्ठ अभियंताओं की देखरेख में टीमें लगातार छापेमारी कर बिजली चोरी पकड़ने में जुटी हैं।

हरिभूमि न्यूज ⏭बहादुरगढ़

भीषण गर्मी के कारण क्षेत्र में बिजली की खपत बढ़ रही है। निगम को इसके साथ ही बिजली चोरी बढ़ने की भी आशंका है। यही कारण है कि बिजली चोरी करते हुए पकड़े जाने पर निगम लाखों रुपए का जुर्माना भी लगा रही है। बहादुरगढ़ मंडल में जून महीने में 40 बिजली चोरी के मामले पकड़े जा चुके हैं, जिन पर करीब 9 लाख 35 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया जा चुका है।

दरअसल, गर्मी के मौसम में बिजली खपत में बढ़ोतरी दर्ज की गई। एक तरफ जहां ग्रामीण क्षेत्र में बिजली बिलों की रिकवरी खपत के मामले में हमेशा कम ही रही है। वहीं शहरी इलाके में भी निगम को बिजली चोरी बढ़ने की आशंका रहती है। बिजली निगम ने लाइनलॉस कम करने के लिए ही बिजली चोरों को पकड़ने के लिए विशेष अभियान छेड़ रखा है। पांचों उपमंडल अभियंताओं तथा कनिष्ठ अभियंताओं की देखरेख में टीमें लगातार छापेमारी कर बिजली चोरी पकड़ने में जुटी हैं।

बहादुरगढ़। घरों के बाहर खंभे पर लगे बिजली के मीटर। फोटो : हरिभूमि

2 लाख 37 हजार रुपये की हो चुकी रिकवरी

निगम के कार्यकारी अभियंता सचिन दहिया के अनुसार जून महीने के दौरान बहादुरगढ़ मंडल में 40 बिजली चोरी के केस दर्ज किए गए। उन पर 9 लाख 35 हजार जुर्माना लगाया गया है। उनके अनुसार सिटी नंबर-वन उपमंडल में 171 कनेक्शन जांचे गए और चोरी के 7 मामले पकड़े गए। उन पर 1 लाख 74 हजार जुर्माना लगाया। सिटी नंबर-टू उपमंडल में 201 कनेक्शन जांचे गए और चोरी के 8 मामले पकड़े गए। उन पर 2 लाख 13 हजार जुर्माना लगाया। लाइनपार उपमंडल में 222 कनेक्शन जांचे गए और चोरी के 11 मामले पकड़े गए। उन पर 2 लाख 29 हजार जुर्माना लगाया। सब अर्बन उपमंडल में 235 कनेक्शन जांचे गए और चोरी के 9 मामले पकड़े गए। उन पर 2 लाख 17 हजार जुर्माना लगाया। बुपनिया उपमंडल में 176 कनेक्शन जांचे गए और चोरी के 5 मामले पकड़े गए। उन पर 1 लाख 2 हजार जुर्माना लगाया। कुल 9 लाख 35 हजार जुर्माने में से 2 लाख 37 हजार रुपए की रिकवरी भी की जा चुकी है।

झज्जर। प्रतियोगिता में भागीदारी करते हुए विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

टेलेंट हंट में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

हरिभूमि न्यूज ⏭झज्जर

एलए सीनियर सैकेंडरी स्कूल में शनिवार को टेलेंट हंट कंपीटिशन का आयोजन किया गया। कंपीटिशन के दौरान विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। प्रतियोगिता परिणामों में हिंदी व इंग्लिश कैलीग्राफी में भूमिका व वृष्टी, पोस्टर मेकिंग में वीरा, स्केचिंग में धृती, सिंगिंग में नूपुर, डांस में श्रेया, पोट डेकोरेशन में वंशिका, क्ले मॉडलिंग में पावी, दीया मॉडलिंग में पूर्वी, इंग्लिश डिक्लेमेशन में कृतिका, हिंदी डिक्लेमेशन में अवनी, हिंदी पोइट्री में अवनी, क्राफ्ट में सरिता ने प्रथम स्थान हासिल किया। स्कूल प्राचार्या निधि कादियान ने विद्यार्थियों के टेलेंट की सराहना की। स्कूल संचालक जगपाल गुलिया, जयदेव दहिया, अनिता गुलिया, नीलम दहिया व प्रबंधक केएम डागर ने कार्यक्रम के विजेता प्रतिभागियों को मेरिट सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। इस मौके पर स्कूल एचओडी रविंद्र लोहचब, पिंकी अहलावत, पुष्पा यादव, आर्ट टीचर रितिका, डांस टीचर जितेंद्र, प्रियंका यादव, डीपीई अमित लोहचब, संजीत सांगवान, भूगोल प्राध्यापक मुकेश शर्मा सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

नेहरू कॉलेज में अब तक 160 छात्रों और 114 छात्राओं ने लिया दाखिला

हरिभूमि न्यूज ⏭झज्जर

विभिन्न कॉलेजों में बीए, बीएससी, बीकॉम, बीबीए और बीसीए आदि स्नातक कक्षाओं की दूसरी मेरिट लिस्ट के दाखिले चल रहे हैं। राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर अमित भारद्वाज ने बताया कि ऑनलाइन फीस सात जुलाई तक भरनी होगी। साथ ही फीस भरने के बाद विद्यार्थियों को अपने दस्तावेजों की जांच के लिए कॉलेज में उपस्थित होना होगा। उन्होंने बताया कि नेहरू कॉलेज में विभिन्न कक्षाओं में पहली और दूसरी मेरिट लिस्ट जारी होने के बाद अब तक 274 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन फीस जमा करवाई है। इनमें 160 छात्र और 114 छात्राएं हैं। अलग-अलग कक्षाओं की बात करें तो बीए के 153, बीएससी फिजिकल साइंस के 17, बीएससी लाइफ साइंस के 20, बीएससी गणित के 11, बीकॉम के 14, बीसीए के 40 तथा बीबीए के 19 विद्यार्थियों ने फीस जमा करवाई है। बता दें कि राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में यूजी कक्षाओं के सात पाठ्यक्रमों की 1200 सीटों के लिए 1567 आवेदन किए गए थे। इन सीटों पर दाखिलों के लिए उच्चतर शिक्षा विभाग ने अपने पोर्टल पर 556 विद्यार्थियों की पहली मेरिट लिस्ट जारी की थी। इसके बाद 106 विद्यार्थियों की दूसरी मेरिट लिस्ट जारी की गई है।

झज्जर। राजकीय नेहरू महाविद्यालय में दाखिले के लिए दस्तावेजों की जांच करवाते हुए विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

देवशयनी एकादशी का उपवास रखने से पूरी होती है मनोकामनाएं: पंडित गुलशन

हरिभूमि न्यूज ⏭झज्जर

आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष में आने वाली एकादशी तिथि को देवशयनी एकादशी के नाम से जाना जाता है। सनातन धर्म में एकादशी का व्रत महत्वपूर्ण स्थान हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस एकादशी से भगवान विष्णु आगामी चार माह तक विश्राम करते हैं। इस समय को चातुर्मास भी कहा जाता है। इस दौरान किसी भी तरह के मांगलिक कार्य नहीं होते। पंडित गुलशन शर्मा बताया कि भगवान विष्णु के विश्राम करने से श्रृष्टि का संचालन भगवान शिव करते हैं। इस दिन भगवान विष्णु की विशेष पूजा-अर्चना करने का महत्व होता है, क्योंकि इसी रात्रि से भगवान का शयन काल आरंभ हो जाता है। देवशयनी एकादशी पर रात्रि में भगवान विष्णु का भजन व स्तुति करना चाहिए। इस उपवास को सबसे श्रेष्ठ उपवास माना जाता हैं। मान्यता है कि इस उपवास को करने से व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। उन्होंने कहा कि पौराणिक मान्यतानुसार देवशयनी एकादशी का व्रत विधि पूर्वक करने से सभी प्रकार के कष्टों से भी मुक्ति मिलती है। महाभारत के समय भगवान श्रीकृष्ण ने एकादशी व्रत का महत्व बताया था। इस व्रत को करने से जीवन में आने वाली सभी बाधाएं दूर होती हैं। धन-धान्य की कोई कमी नहीं रहती है। व्रत के दौरान भगवान विष्णु और पीपल के वृक्ष की पूजा करने से विशेष लाभ मिलता है। इस दिन एकादशी की कथा श्रवण करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि अबकी बार एकादशी का व्रत रविवार को रखा जाएगा। यह व्रत सभी व्रतों में श्रेष्ठ माना गया है।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में भाग लेने वाले नन्हे मुन्ने। फोटो : हरिभूमि

बच्चों को चीनी के नुकसान बताए

हरिभूमि न्यूज ⏭बहादुरगढ़

गांव लडरावण में स्थित श्री स्वामी समर्थ इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को शुगर बोर्ड का आयोजन किया गया। इस दौरान शुगर बोर्ड तैयार करवाने के साथ-साथ पोस्टर मेंकिंग प्रतियोगिता और भाषण प्रतियोगिता भी रखी गई। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अत्यधिक चीनी सेवन के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना था। विद्यार्थियों ने भाषण में कहा कि मिठाइयां, चॉकलेट्स, पैकेज्ड जूस और कोल्ड ड्रिंक्स में छिपी हुई अतिरिक्त चीनी हमारी सेहत को नुकसान पहुंचा रही है। प्रिंसिपल किशोर कुमार शर्मा ने प्राकृतिक शुगर (गन्ना) और फ्री शुगर में अंतर बताया। उन्होंने एक आयु चार्ट के माध्यम से समझाया कि स्वस्थ विद्यार्थी एक दिन में कितनी चीनी ले सकता है। उन्होंने चीनी से होने वाले दीर्घकालिक नुकसान के बारे में भी विस्तार से बताया। स्कूल संचालक अभिषेक छिल्लर ने विद्यार्थियों को चीनी के अधिक सेवन के खतरों से आगाह किया। उन्होंने कहा कि ये बोर्ड स्कूलों में जागरूकता बढ़ाने और स्वस्थ खानपान को बढ़ावा देने का काम करेंगे।

बहादुरगढ़। मंदिर के पुजारी को भावपूर्ण विदाई देते समिति सदस्य।

मंदिर से पुजारी को दी भावभीनी विदाई

बहादुरगढ़। ब्रह्म समाज सेवा समिति भवन में गौरीशंकर मंदिर के पुजारी श्री भगवान शर्मा को आयु 70 साल से अधिक होने पर मंदिर की सेवाओं से यादगार विदाई दी गई। समिति सदस्यों द्वारा शॉल व नगद धनराशि भेंट की गई। गौरीशंकर मंदिर में नए पुजारी के रूप में पेटवाड़ निवासी सुरेश भारद्वाज ने कार्यभार संभाल लिया। इस मौके पर प्रधान महेश वशिष्ट, सुरेंद्र कौशिक, रामानंद, भूपेंद्र वशिष्ट, सुरेंद्र वशिष्ट व घनश्याम आदि उपस्थित रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

आत्महत्या का कारण नकारात्मक सोच

हरिभूमि न्यूज ⏭बहादुरगढ़

युवाओं में बढ़ते अवसाद और आत्मत्या की हर तरफ चर्चा है। ऐसा क्यों हो रहा है और आज की पीढ़ी को इससे कैसे रोका जा सकता है? इसके लिए हरिभूमि ने राजकीय महिला महाविद्यालय में मनोविज्ञान की सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनीता छिल्लर से बात की। उनके अनुसार परिवार का दबाव, बहुत ज्यादा नकारात्मकता और मानसिक तनाव आत्महत्या का कारण बनता है।

डॉ. सुनीता छिल्लर ने बताया कि वर्तमान दौर में किसी भी आयुवर्ग के व्यक्ति को असफलता सहज स्वीकार्य नहीं होती। किंतु यह स्थिति, किशोरावस्था व युवावस्था में बेहद संवेदनशील होती है। जब किसी युवा को लगने लगता है कि वह अपने परिजनों के सपनों को साकार नहीं कर पाएगा, तो वह नकारात्मक सोच में डूब जाता है और इस तरह की परिस्थिति उसे कहीं न कहीं उसे आत्महत्या के लिए विवश करती है। उन्होंने बताया कि आत्महत्या का मूल कारण दरअसल डिप्रेशन है। आत्महत्या के मानसिक, सामाजिक, साइकोलॉजिकल, बायोलॉजिकल एवं जेनेटिक कारण होते हैं। ऐसे व्यक्ति जिनमें आत्महत्या के जीन होते हैं, उनमें बायोकेमिकल परिवर्तन हो जाते हैं और वह आत्महत्या जैसा घृणित कदम उठाते हैं। तनावपूर्ण जीवन, घरेलू समस्याएं, मानसिक रोग आदि इसके कई कारण होते हैं। जिन लोगों में आत्महत्या के बारे में सोचने की आदत (सुसाइडल फेंटेसी) होती है, वही आत्महत्या ज्यादा करते हैं। नकारात्मकता आत्महत्या की बहुत बड़ी वजह है, क्योंकि इस समय आप सही सलाह नही ले पाते। युवावस्था संक्रमण काल है, युवाओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खासतौर से कॅरियर, जॉब, रिश्ते, खुद की इच्छाएं, प्रेम संबंध, मैरिज, सैटलमेंट, भविष्य की पढ़ाई आदि व्यक्तिगत समस्याएं। जब वह इस अवस्था में आता है, तो बेरोजगारी का शिकार हो जाता है और भविष्य के प्रति अनिश्चितता बढ़ जाती है। अपरिपक्वता के कारण कई बार परेशानियां आती हैं। जिससे डिप्रेशन, एंग्जाइटी, सायकोसिस, पर्सनालिटी डिसऑर्डर की स्थिति बन जाती है।

गुरु पूर्णिमा पर भंडारा दस को

झज्जर। ऑफिसर कालोनी स्थित हनुमान मंदिर में गुरू पूर्णिमा के उपलक्ष्य में आगामी दस जुलाई को भंडारे का आयोजन किया जाएगा। श्रद्धालु अनिल कपूर ने बताया कि गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में मंदिर परिसर में सुबह आठ बजे से दोपहर दो बजे तक तथा सायं चार बजे से छह बजे तक मूल भागवत पाठ भी किया जा रहा है जो नौ जुलाई तक चलेगा। उन्होंने बताया कि नौ जुलाई की सुबह आठ बजे अखंड रामायण पाठ का आयोजन होगा। समारोह के अंतिम दिन 10 जुलाई को सुबह 8 बजे हवन, 11 बजे कन्या पूजन तथा दोपहर बारह बजे से भंडारे की शुरुआत की जाएगी।

अवैध हथियार, नशीले पदार्थ, अवैध शराब के मामलों में 234 आरोपी किए गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭झज्जर

जिला पुलिस द्वारा अवैध हथियार, नशीले पदार्थ, अवैध शराब व सट्टा खाईवाली करने वालों के खिलाफ विशेष अभियान चलाया जा रहा है। प्रवक्ता ने बताया कि जिला पुलिस आयुक्त डॉक्टर राजश्री सिंह के निर्देशानुसार चलाए गए अभियान के तहत बीते छह माह के दौरान जिले के अलग-अलग स्थानों पर शस्त्र अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए 72 मुकदमों में 108 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। जिनसे 74 अवैध पिस्तौल सहित 165 जिंदा कारतूस बरामद हुए। वहीं नशीले पदार्थों के अलग-अलग 48 मामलों में 61 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।

जिनसे नशीला पदार्थ अफिम 3.688 किलोग्राम, चरस 1.974 किलोग्राम, गांजा 84 किलो 976 ग्राम, 14 नशीले इंजेक्शन और 65 टैबलेट, 42 लिक्विड सीसी, हीरोइन और स्मैक बरामद। वहीं अवैध शराब के मामलों में 21 आरोपियों को गिरफ्तार कर उनसे अंग्रेजी व देसी की 37764 बोतल बरामद कि गई। उन्होंने बताया कि सार्वजनिक स्थान पर सट्टा खाई वाले करने के मामले में 44 आरोपियों को गिरफ्तार करके उनसे 250809 रुपए बरामद किए गए। इसके अलावा पुलिस की अलग-अलग टीमों ने 344 वयस्कों और बच्चों को सहकुशल बरामद करके उनके परिजनों के सौंपा गया है। जिनमें 85 पुरुष, 183 महिलाएं और 76 बच्चे शामिल हैं।

धूप और उमसभरी गर्मी ने किया हाल बेहाल

बहादुरगढ़। शुक्रवार को हुई बरसात के बाद उमस और अधिक बढ़ गई है। शनिवार को तेज धूप के साथ उमसभरी गर्मी ने लोगों का हाल बेहाल कर दिया। बार-बार लग रहे बिजली के कटों ने भी खूब परेशानी बढ़ाई।

शनिवार को सुबह ही धूप खिल गई थी। दोपहर होते होते धूप तेज हो गई। हालांकि बीच बीच में कई बार आसमान में बादल भी छाए। हवा न चलने के कारण वातावरण में उमस बढ़ गई। अधिकतम तापमान 35 डिग्री दर्ज किया गया। गर्मी से लोगों को काफी परेशानी हुई। वहीं कई कॉलोनियों में बिजली आपूर्ति भी प्रभावित रही। कई बार बिजली के कट लगे, इस कारण पसीने से लोगों का हाल बेहाल हो गया। बता दें कि बीते कुछ दिनों से इलाके में मौसम बदला हुआ है। रोजाना बादल छाने से बारिश के आसार बने रहते हैं। शुक्रवार को यहां अच्छी बारिश हुई थी। जिससे कुछ देर तक लोगों को गर्मी से राहत मिली लेकिन उसके अगले ही दिन शनिवार को गर्मी काफी बढ़ गई। आगामी कुछ दिनों तक बरसात की संभावना बनी हुई है।

बहादुरगढ़ की सब्जी मंडी से अवैध सब्जी विक्रेताओं को हटाने की कर रहे मांग

नौ से हड़ताल करेंगे लाइसेंस धारक सब्जी विक्रेता

हरिभूमि न्यूज ⏭बहादुरगढ़

शहर की सब्जी मंडी में अवैध सब्जी विक्रेताओं के विरुद्ध लाइसेंसशुदा सब्जी विक्रेताओं ने मोर्चा खोल दिया है। सब्जी विक्रेताओं ने 9 जुलाई से सब्जी मंडी बंद कर अनिश्चितकालीन धरना शुरू करने की चेतावनी दी है। वे गत कई सालों से अवैध सब्जी विक्रेताओं को सब्जी मंडी से हटाने की मांग कर रहे हैं। इसे लेकर अदालत में केस भी कर रखा है, जिसकी सुनवाई 7 जुलाई को होगी।

बता दें कि बहादुरगढ़ की सब्जी मंडी में 210 रजिस्टर्ड सब्जी विक्रेता हैं। इन लोगों ने 6300 रुपए वार्षिक फीस भरकर लाइसेंस भी ले रखा है और 1500 रुपए महीना किराया भी देते हैं। एक दिन किराया लेट होने पर 25 प्रतिशत जुर्माना भी अदा करते हैं। मगर दर्जनों अवैध सब्जी विक्रेता भी सब्जी मंडी में उनसे आगे बैठकर सब्जी बेच रहे हैं। इसे एक तरफ जहां लाइसेंसशुदा सब्जी विक्रेताओं की बिक्री प्रभावित हो रही है, वहीं दूसरी तरफ सरकार को राजस्व का नुकसान भी हो रहा है। सब्जी विक्रेताओं के प्रधान बलवान लोहचब का कहना है कि बहादुरगढ़ की सब्जी मंडी में किसान शेड के नीचे करीब 100 अवैध सब्जी विक्रेता बैठे हैं। ये ना तो मार्केट कमेटी को किराया देते हैं और न ही फीस भरकर लाइसेंस ले रखा। उन्होंने कई बार इसकी शिकायत अधिकारियों से की है, लेकिन इसके बावजूद अवैध सब्जी विक्रेताओं के खिलाफ कार्रवाई नहीं की जा रही। संगठन के सचिव ओमप्रकाश डोरा ने आरोप लगाया कि अधिकारियों और आढ़तियों की मिलीभगत के कारण अवैध सब्जी विक्रेता किसानों के शेड में गैर कानूनी रूप से बैठकर सब्जी बेचते हैं।

उन्होंने 9 जुलाई से अनिश्चितकालीन धरना देने और मंडी में सब्जी बिक्री बंद करने का भी ऐलान किया है। विनोद यादव, नरेश जून, दीपू पोपली, नरेश सैनी, संदीप कश्यप, केसरी कुमार, रविकिशन पांडे, मनोज कश्यप व राजेंद्र कश्यप आदि फुटकर सब्जी विक्रेताओं ने बहादुरगढ़ सब्जी मंडी से अवैध फुटकर विक्रेताओं को हटाने की मांग की है। ऐसा होने तक उनका धरना प्रदर्शन जारी रहेगा।

बहादुरगढ़। हड़ताल का ऐलान करते लाइसेंसशुदा सब्जी विक्रेता। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 6 जुलाई 2025

विशेष: विश्व जनसंख्या दिवस
11 जुलाई

पिछले दो-तीन दशकों में शहरी जनसंख्या के अनियंत्रित रूप से बढ़ने की वजह से लोगों का जीवन समस्याओं से घिरता जा रहा है। इससे साफ हवा-पानी की कमी, ट्रैफिक जाम, रहने के लिए असुविधाजनक आवास समेत कई तरह की परेशानियों के साथ लोग जीने के लिए बाध्य हैं। आने वाले वर्षों में उत्पन्न होने वाले गंभीर संकटों से बचने के लिए इन चुनौतियों पर गंभीरता से विचार करना होगा।

जीवन कठिन बना रही शहरों की बढ़ती जनसंख्या

कवर स्टोरी/शैलेंद्र सिंह

भारत में तेजी से बढ़ते शहरीकरण ने लोगों के लिए आर्थिक अवसर तो पैदा किए हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि इससे लोगों के जीवन की गुणवत्ता में बहुत गिरावट आई है। यानी बढ़ते शहरीकरण ने शहरों में रहने वाले लोगों के जीवन को बहुत तकलीफदेह बना दिया है। ये पूरी दुनिया की समस्या नहीं बल्कि भारत और कुछ अन्य विकासशील देशों की ही है, जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप में बांग्लादेश और पाकिस्तान भी शामिल हैं।

शहरों में नागरिक सुविधाओं की कमी

आजादी के बाद देश में तेजी से शहरीकरण बढ़ा और इस दौरान शहर, देश के आर्थिक अवसरों का केंद्र बन कर भी उभरे। लेकिन भारत में शहरों की तरफ गांवों से बहुत तेज पलायन हुआ, जिसने शहरों में जीवन जीने की स्थितियों को बहुत गहरे तक प्रभावित किया है। नागरिक सुविधाओं का देश के लगभग हर शहर में अभाव है। आज देश का शायद ही कोई ऐसा शहर हो, जो पूरी तरह साफ-सुथरा, खुला-खुला और नागरिक सुविधाओं से भरपूर हो। हर शहर में कुछ इलाके तो बहुत अच्छे हैं, लेकिन सभी शहरों के ज्यादातर हिस्से सुविधाओं की नजर से समस्याओं से ग्रस्त दिखते हैं। चाहे मुंबई हो, दिल्ली हो, बेंगलुरु हो या हैदराबाद। देश और दुनिया के ये बड़े-बड़े शहर आज बड़ी-बड़ी उपलब्धियों के गढ़ तो हैं, लेकिन इन बड़े शहरों में बहुसंख्यक लोग भीषण परेशानियों के बीच रह रहे हैं।

अनियोजित शहरीकरण

अपने देश में 80 के दशक के बाद से इतना तेज शहरीकरण हो रहा है कि देश का कोई भी शहर अपनी बढ़ने वाली जनसंख्या को ध्यान में रखकर नगर नियोजन का काम नहीं कर पा रहा है। हर शहर अगले 10 सालों तक जितनी

जनसंख्या का अनुमान लगाकर नियोजन करता है, जनसंख्या हमेशा उससे दो से तीन गुना बढ़ जाती है। यही कारण है कि भारत के सभी बड़े शहर अनियोजित शहरीकरण की समस्या से जूझ रहे हैं। यहां तक कि कानपुर, लुधियाना, भोपाल, अमृतसर, कोल्हापुर और राजकोट जैसे मझौले शहर भी जनसंख्या के दबाव से इस कदर अव्यवस्थित हो गए हैं कि इनकी आधारभूत संरचना के मुकाबले कई गुना ज्यादा इन पर जनसंख्या का दबाव है। दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु जैसे महानगर लाख प्रयासों के बावजूद पिछले कई दशकों में अपने शहर की झुग्गी बस्तियां नहीं खत्म कर सके और न ही इन झुग्गी बस्तियों को साफ पानी, सीवर या बिजली की सुविधा दे सके हैं।

बढ़ते ट्रैफिक में फंसे शहर

आवास और बिजली, पानी की समस्या तो शहरों में है ही, लगभग सभी शहर आज सबसे बड़ी जिस समस्या से जूझ रहे हैं, वह है-सड़कों पर वाहनों की बेतहाशा वृद्धि। अंधाधुंध बढ़े वाहनों के कारण बेंगलुरु और मुंबई जैसे शहर तो थम से गए हैं। बेंगलुरु में पीक आवर्स में सड़कों पर यातायात बिल्कुल रेंगता है। 10 किलोमीटर की दूरी अकसर लोग कार से डेढ़ से दो घंटे में तय कर पाते हैं। यहां की सड़कें बिल्कुल चोक्ड हो गई हैं, उन पर क्षमता से 300 फीसदी से ज्यादा वाहन दौड़ रहे हैं। इसीलिए आज वहां की सबसे बड़ी समस्या ट्रैफिक की है। इससे भी खराब दशा मुंबई की है। मुंबई में पीक आवर्स में सड़क यातायात की रफ्तार 5 से 10 किलोमीटर प्रतिघंटा होती है। कमोवेश सभी शहरों का यही हाल है। यही वजह है कि आज हर एक घंटे में भारत के सिर्फ शहरों में 150 से लेकर 180 लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर रहे हैं।

नागरिक सुविधाओं का अभाव

देश में बड़े शहर तेजी से फैल रहे हैं, जहां स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, कचरा प्रबंधन, सीवर और सुरक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएं हर किसी के लिए नहीं हैं। सिर्फ कुछ लोगों के लिए ही हैं। शहरों की कुछ कालोनियों में ही नियमित रूप से साफ पानी आता है, सड़कें सपाट और चौड़ी हैं, स्कूल, अस्पताल आदि की सुविधाएं हैं। जबकि शहरों के बड़े हिस्से इन सुविधाओं से वंचित हैं। यही कारण है कि नागरिक सुविधाओं के नजरिए से देश के बड़े शहरों में पर्यावरणीय संकट भी विकट है। पिछले दो दशकों में लाखों की तादाद में पेड़ काटे गए हैं। बस्तियों के बीच मौजूद तालाब, नाले आदि सब पाट दिए गए हैं। शहरों के बीच से बहने वाली नदियों को सीवर में तब्दील कर दिया गया है। यही कारण है कि देश के बड़े शहर, वायु प्रदूषण, जल भराव, हीट वेव और घटते भू-जल स्तर की समस्याओं से दो चार हैं।

जीवन की गुणवत्ता में गिरावट और तनाव

देश के शहरों में आम लोगों का जीवन जिंदगी की गुणवत्ता से जंग कर रहा है। बहुसंख्यक शहरी लोगों के जीवन में मजबूत सामाजिक संबंध नहीं रहे। समय और जगह की कमी है। मानसिक बीमारियों का रेला है और खालीपन व असुरक्षा का लगातार घेरा बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण लोगों के आम जीवन में जबर्दस्त सामाजिक तनाव और असमानता व्याप्त है। कुल मिलाकर भारत में पिछले चार दशकों में जनसंख्या का जो तेज शहरीकरण हुआ है, उसके कारण हमारे शहरों की व्यवस्था को बनाए रखना बड़ी चुनौती बन गया है। *

कोठरियों में रहते लोग

यूं तो हर शहर में कुछ चमचमाती हुई इमारतें होती हैं, कुछ बड़े-बड़े बंगले होते हैं। लेकिन शहरों का 70 से 75 फीसदी हिस्सा घरों का नहीं, कोठरियों या छोटे-छोटे दड़बों का जंगल बन गया है। मध्यम और निम्न वर्ग के लिए सस्ते घरों में गरिमामय आवास की कल्पना नहीं की जा सकती। मुंबई में तो 250 से 300 फीट के एक कमरे वाले फ्लैट लेना भी सपने जैसा हो चुका है, क्योंकि ये छोटे-छोटे दड़बे भी 40 से 50 लाख रुपए के मिलते हैं। भारत के लगभग सभी शहरों में प्राइवेट बिल्डर फ्लैट्स और कॉलोनियों की भरमार है, जहां रहने के लिए आवास को गरिमामय बनाने का कोई मापदंड नहीं है। यहां झुग्गियां, किराए के लिए मकान और अनधिकृत कॉलोनियों की अंतहीन रेंज हैं। दिल्ली में 80 से 90 लाख लोग अनधिकृत कॉलोनियों में और 30 से 35 लाख लोग झुग्गी बस्तियों में रहते हैं। जहां लोगों को न तो भावनात्मक सुरक्षा है और न ही मनोवैज्ञानिक निजता।

बदलाव / नरेंद्र शर्मा

इसमें संदेह नहीं कि आज के दौर में लगभग हर क्षेत्र में एआई की घुसपैठ बढ़ रही है। साहित्य, संगीत और कला में भी इसकी एंट्री हो चुकी है। लेकिन लाख कोशिश के बाद भी इससे निर्मित आर्ट प्रोडक्ट, हमारे मन को स्पर्श नहीं कर पाता है।

मन को नहीं छू पाता एआई का आर्ट प्रोडक्ट

आज पूरी दुनिया में इस आशंका का सवाल गहराता जा रहा है कि क्या एआई, कला से उसकी स्वाभाविक कल्पनाशीलता, मौलिकता और कलात्मकता छीन रही है? दरअसल, कला का मूल स्वभाव सृजन है। ऐसा सृजन, जो व्यक्ति की भावनाओं, संवेदनाओं, अनुभवों और कल्पनाओं से उपजता है। चित्रकला, संगीत, साहित्य, मूर्तिकला या रंगमंच। ये सभी विद्याएं मानवीय कल्पना शक्ति का विस्तार हैं। विविध रूपीय विस्तार। लेकिन अब एआई द्वारा कुछ ही सेकेंड में चित्र बनाए जा रहे हैं, कहानियां लिखी जा रही हैं, संगीत रचा जा रहा है, तो क्या ये सारी एआई से पैदा होने वाली कलाएं उस मानवीय कल्पनाशीलता की बराबरी करती हैं? यह सवाल इसलिए भी जरूरी है कि अगर वास्तव में ऐसा होता है तो लगता है कि आजतक के मानव विकास क्रम को मशीन यानी एआई ने एक झटके में अर्थहीन कर दिया है। लेकिन यह सोचना सही नहीं है।

भावनाहीन होते हैं एआई प्रोडक्ट: एआई टूल हजारों पुराने चित्रों के डेटा के आधार पर नई पेंटिंग क्षणभर में बना दे रहे हैं। आप अगर इन एआई टूल्स से कहते हैं कि एक महिला जो समुद्र की लहरों से बनी है और जिसकी आंखों में तारे झिलमिला रहे हैं, ऐसी पेंटिंग बनाओ तो ये टूल्स एक क्षण में यह पेंटिंग्स बना करके हाजिर कर देंगे। लेकिन क्या ये पेंटिंग्स उस कलाकार की पेंटिंग जैसी होगी, जो समुद्र किनारे अपना पेंटिंग स्टैंड लगाए घंटों लहरों से आंखमिचौली करते हुए अपनी कल्पना में रंग भरता है। जी नहीं, बिल्कुल नहीं होगी। इस कलाकार की पेंटिंग्स में जो कलाकृति उभर कर आएगी, वह भावनाओं से संवाद करेगी। एआई की कल्पना ऐसा नहीं कर सकती। कलाकार की बनाई गई पेंटिंग संभावनाओं का आंकड़ा नहीं होगी, क्योंकि वह पहले से दुनिया में मौजूद किसी पेंटिंग की प्रतिकृति नहीं गढ़ रहा होगा, उसके मन में एक नई ही छवि मूर्तवत हो रही होगी, जो पहले नहीं होगी। जिसकी आंखों में कलाकार की भावनाएं, संवेदनाएं सब कुछ बोल रही होंगी। लेकिन एआई को यह सब नहीं करना। उसे अपने डाटा स्टोर में मौजूद आंकड़ों के मेल से एक नई फोटो कॉपी भर गढ़नी है। फर्क सिर्फ इतना होगा कि एआई किसी एक कलाकृति की बजाय बहुत सी कलाकृतियों को आपस में मिक्स करके उनसे एक नई कलाकृति निर्मित करने का भ्रम भर रचेगा। इसलिए कहा जा सकता है कि एआई कला का पुनरोत्पादन तो कर सकता है पर कला सृजन नहीं कर सकता। इसलिए एआई कलाकारों से उनकी कल्पनाशीलता नहीं छीन सकता।

अनुभूति को नहीं दे सकता शब्द: अब जीपीटी मॉडल हिंदी और अंग्रेजी में आदेश पर कविताएं लिख रहे हैं। मसलन, आप उनसे कहें एक प्रेम कविता लिखो, जिसमें बारिश भी हो, मन का उल्लास भी हो, तारे सितारे छूने की कल्पनाशीलता भी हो, तो वह शब्दों के उस ढांचे में जिसे कविता कहना कहीं से उचित नहीं होगा, में डाल तो देगा, लेकिन वे शब्द कभी दिल को नहीं छुएंगे। यह एक किस्म की मशीनी शब्द उत्पाद होगा। ऐसी कविता न कवि को खुशी देगी और न ही कविता सुनने वालों को कहीं से प्रेरित कर सकेगी। अगर यही प्रेम कविताएं होंगी, तो फिर कविता का कोई मतलब नहीं रह जाएगा। इसलिए एआई कुछ भले कर लें या चाहे करता दिखे, लेकिन वह न तो इंसानी भावनाओं की नकल कर सकता है और न ही इंसानी अनुभूति को शब्द या कैनवास में उतार सकता है। एआई के लिए बारिश एक गतिविधि भर है और किसी कवि या कलाकार के लिए बारिश एक समूचा जीवन है, जीवन धड़कन है और उसकी एक-एक बूंद पर उसकी लाखों अनुभूतियों का बसेरा हो सकता है। कवि या कलाकार की रचना केवल शब्दों या रंगों का संगठन भर नहीं होगा, वो अनुभूति की एक जीवंत दुनिया होगी। इसलिए एआई कितनी भी तेज रफ्तार से कला की प्रतिकृतियां रचने में चौंका रहा हो, पर कभी दिल और दिमाग को झंकृत नहीं कर पाएगी।

बनी रहेगी कला की जीवंतता: एआई के बारे में यही बात संगीत रचना, थिएटर और अभिनय आदि पर भी लागू होती है। एआई का कोई टूल किसी रंगमंच के अभिनेता की जगह नहीं ले सकता। एआई की सजगता, उसकी मशीनी चातुरी कभी किसी नाटक की स्क्रिप्ट की जगह नहीं ले सकती। एआई कला से या कलाकारों से उनकी कल्पनाशीलता या जीवंतता की अनुभूति कभी नहीं छीन सकती। *

सही नहीं हर बात पर साधे रहना चुप्पी

जिस तरह बेवजह और जरूरत से ज्यादा बोलना सही नहीं होता, उसी तरह जरूरत के समय ना बोलना या हमेशा चुप्पी साधे रहना भी नुकसानदेह होता है। इस मामले में सोच-समझकर एक संतुलन की जरूरत होती है।

जीवनशैली
भूपेंद्र भारतीय

मानव जीवन की सबसे सुंदर विशेषता है, उसे ईश्वर द्वारा मिली अभिव्यक्ति की शक्ति। अभिव्यक्ति को एक शक्ति ही माना जाना चाहिए, जो इस ब्रह्मांड में सिर्फ मानव को पूर्ण रूप में मिली है। लेकिन क्या हम अभिव्यक्ति की इस शक्ति का सही उपयोग कर पाते हैं? यह प्रश्न हमें स्वयं से पूछना चाहिए।

हो सकती हैं कई समस्याएं: सामान्य तौर पर अपनी बात कहना या फिर कुछ बोलना ही अभिव्यक्ति करना कहा जाता है। वहीं कुछ नहीं बोलना मतलब चुप रहना। हालांकि किसी मामले में चुप रहना भी अभिव्यक्ति का ही एक रूप माना जाता है, लेकिन जब जरूरत हो तब अपनी बात, विचार व्यक्त न करना, कई पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं को जन्म दे सकता है। यही नहीं हमेशा चुप्पी साधे रखना मानसिक रोग की भी वजह बन सकती है। हर इंसान के जीवन में ऐसे अवसर अकसर आते रहते हैं, जब उसे चुप रहना पड़ता है। लेकिन क्या हमेशा चुप रहना, उसके आस-पास के परिवेश के लिए उचित होता है? यह प्रश्न ही यहां सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण है, जो चुप्पियों को जन्म देता है। ऐसी चुप्पियां हमें भारी नुकसान पहुंचाती हैं। हमें अंदर से धीरे-धीरे तोड़ती जाती हैं। हमें पल-पल कमजोर करती रहती हैं। सच्चाई यह है कि जरूरत से ज्यादा चुप्पियां, हमें प्रतिपल दीमक की तरह खोखला करती रहती हैं।

हमेशा ना रहें खामोश: प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' का प्रसिद्ध कथन है, 'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?' यह कथन उचित समय पर चुप्पियों को तोड़ने का बल देता है,

वहीं यह संदेश भी देता है कि सही बात को बोलना ही चाहिए। भले ही छोटा-मोटा बिगाड़ हो जाए। लाख कोशिशों के बाद भी, एक न एक दिन कितनी भी बड़ी चुप्पी हो उसे तोड़ना ही पड़ता है, नहीं तो वह चुप्पी आपको तोड़ देगी।

हो सकते हैं महाविनाश: चुप्पी के कारण महाभारत जैसे युद्ध तक हो सकते हैं। दुर्योधन और दुःशासन के अनाचार के समय अगर भीष्म, द्रोणाचार्य और धृतराष्ट्र समेत दरबार में उपस्थित अन्य लोगों ने चुप्पी तोड़ दी होती, अनाचार को रोकने के लिए आवाज उठाई होती तो महाभारत कभी नहीं होता। इसी तरह धर्मराज युधिष्ठिर ने अपनी माता कुंती को महाभारत युद्ध के बाद कहा था, 'माता, कर्ण से जुड़ा सत्य आपने छुपाकर बहुत बड़ी गलती कर दी।'

चुप्पी साधने के कारण: चुप्पी साधने के अनेक कारण हो सकते हैं। हम डरते हैं कि हमारे बोलने से कोई नुकसान ना हो जाए। वह फिर मानव संबंधों का मामला हो या फिर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि से जुड़े मामले हों। हमारे सत्य बोलने से किसी को बुरा लग सकता है और हम अपने संबंधों को बिगाड़ना नहीं चाहते, किसी को नाराज नहीं करना चाहते। वास्तव में सत्य डरावना या फिर बुरा नहीं होता है। लेकिन हम सत्य की सुंदरता देख नहीं पाते। इसी सत्य की शक्ति के स्वरूप हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में लिखते हैं, 'सत्य के लिए, किसी से भी न डरना, गुरु से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।' यह डर ही हमको बहुत सी बातें ना कहने के लिए विवश करता है कि चुप रहो। यह चुप रहना ही धीरे-धीरे चुप्पियों का बड़ा रूप ले लेता है और हमारे अंदर डर का एक मकड़जाल बन जाता है। हम यथार्थ से भागने लगते हैं।

बढ़ रही हैं जीवन में चुप्पियां: वर्तमान दौर में मोबाइल और इंटरनेट जैसी तकनीकी ने भी हमें चुप्पी और संवादहीनता की ओर बढ़ाया है। परिवार में हर कोई इन्हीं में व्यस्त रहता है। जहां संवाद नहीं वहां जीवन और समाज आगे नहीं बढ़ सकता है। प्रसिद्ध संत तरुण सागर कहते हैं, 'समाज, परिवार और आपसी संबंधों से कभी संवाद बंद मत करो। जिस दिन आपने संबंधों में बोलना बंद किया, उस दिन से आपके संबंध धीरे-धीरे टूटना शुरू हो जाएंगे। इसलिए बोलना कभी बंद मत करना।' *

गजल
वसीम अहमद

करार आने लगा है

जो कुछ-कुछ एतबार आने लगा है
तो इस दिल को करार आने लगा है
जैसे-जैसे है उनसे अपनत्व जागा
मुसलसल उनपे प्यार आने लगा है
कि जब से घर में दर्पण आ गया है
उन्हें करना सिंगार आने लगा है
परस्पर दिल्लगी जब से बढ़ी है
तो रिश्तों में सुधार आने लगा है
हूं जब से उनको अपना मान बैठा
मेरे दिल को करार आने लगा है।
निगाहों को निगाहें पढ़ रही हैं
मुसलसल एतबार आने लगा है

व्यंग्य
सूर्यकुमार पांडेय

जिनका काम सूखी तनख्वाह से चल जाता हो, वे फिक्र न करें! किंतु जो सतत सेविंग में विश्वास रखते हैं, निलंबन उनके लिए राजकीय वरदान है। इसीलिए मूरख रोते हैं और ज्ञानी फरमाते हैं, काम विलंबित करो, निलंबित हो जाओ! फिर कोई और पार्ट टाइम कमाई वाला काम करो।

निलंबन में मजा है

वह सरकारी काम, काम नहीं होता, जो लंबित न रहे और वह सरकारी अफसर, अफसर नहीं, जो नौकरी में एक-दो बार निलंबित न रहे। सस्पेंड होना बुरा नहीं है। बुरा होता है, निलंबित होकर फटाफट बहाल हो जाना। निलंबित हुए बिना महंगाई भत्ता, नगर प्रतिकर भत्ता आदि बहुत सारे भत्ते मिल सकते हैं, मगर निलंबन भत्ता नसीब नहीं हो सकता।

जिनका काम सूखी तनख्वाह से चल जाता हो, वे फिक्र न करें! किंतु जो सतत सेविंग में विश्वास रखते हैं, निलंबन उनके लिए राजकीय वरदान है। इसीलिए मूरख रोते हैं और ज्ञानी फरमाते हैं, काम विलंबित करो, निलंबित हो जाओ! फिर कोई और पार्ट टाइम कमाई वाला काम करो। मेरे एक डॉक्टर मित्र हैं। अपने सीनियर अफसर से जान-बूझकर पंगा ले बैठे। सस्पेंड हो गए। अब शान से प्राइवेट प्रैक्टिस झाड़ रहे हैं। विभाग ने हर मुमकिन कोशिश की कि वह बहाल हो जाएं, वह खुद ही मुकर गए। सस्पेंशन रस का स्वाद उनके मुंह लग चुका है।

वह जानते हैं, सरकार दयालु है। एक-न-एक दिन पाई-पाई जोड़कर बुढ़ापे के वक्त उनकी चारपाई पर धर जाएगी। अब वह अपने उसी सस्पेंडक सीनियर अफसर को मासिक रूप से बंधी रकम पहुंचाते हैं। इसलिए नहीं कि बहाल हो जाएं, बल्कि इसलिए कि निलंबन बरकरार रहे। इस भांति दोनों सुखी और संपन्न हैं। डॉक्टर साहब की प्राइवेट प्रैक्टिस चल रही है, बड़े साहब की पब्लिक प्रैक्टिस। पारस्परिक सद्भावना सुदृढ़ है। जनसेवा और राजसेवा साथ-साथ चलायमान हैं।

मेरे एक और मित्र बड़े अफसर हैं। ऊंची पकड़ के चलते बरसों से एक ही जिले में अटके हुए हैं। उनके पास तरह-तरह के तिकड़मी डंडे हैं। पर वह पूरे जिले को एक ही डंडे से हांकते हैं। स्वभाव से मृदु हैं। अंदाज दोस्ताना है। मैं अकसर वार्तालाप की तलब उठने पर अपनी शामें जाया करने उनके सरकारी अजायब खाने पर पहुंच जाया करता हूं।

उस रोज गया, तो उनका चपरासी चौंकता हुआ बोला, 'अरे, आपको नहीं मालूम, अपने साहब तो हसबैंड होइ गए!'

अब चौंकने की बारी मेरी थी। मैं जानता था, साहब कुंआरे हैं। न सगाई, न न्यौता, न दावत!

यह साहब हसबैंड कब हो गए? दिमाग पर जोर डाला, तो समझ में आया कि यह साहब हसबैंड नहीं, सस्पेंड हो गए हैं। और सच भी यही है, हसबैंड ओर सस्पेंड होने में कोई खास फर्क नहीं होता। ये दोनों ही हो जाने के बाद आमदनी का एक हिस्सा किसी और की भेंट हो जाया करता है। तब कमाई के नए जरिए तलाशने ही पड़ जाते हैं। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी लघुकथाएं

अलका 'सोनी' की लघुकथाएं और कविताएं पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। सरल-सहज लहजे में वे जीवन की सूक्ष्म संवेदनाओं को अपने लेखन में व्यक्त करती हैं। हाल में छपकर आए उनके लघुकथा संग्रह 'हवा में बनती हैं नई जगहें' की लघुकथाओं में भी इसकी बानगी देखी जा सकती है। 'टूटा तारा' लघुकथा के जरिए लेखिका ने शहरी जीवनशैली की विडंबनाओं और उसके फलस्वरूप नई पीढ़ी की प्रकृति से बढ़ती दूरी को मार्मिक तरीके से उभारा है। इसी तरह 'जिंदगी का डिस्काउंट' लघुकथा में भी आधुनिक जीवनशैली में बिसरती जा रही खुशी और अपनेपन की परिभाषा पर प्रभावी तरीके से कटाक्ष किया गया है। 'पापा का कोना' लघुकथा भी बहुत हौले से हमारी निर्जीव होती जा रही संवेदना को स्पर्श करती है। इसमें नई पीढ़ी फादर्स डे मनाने के लिए इस कदर उत्साहित होती है कि उसे पुरानी पीढ़ी के अपने पिता ही सेलिब्रेशन में मिसफिट लगने लगते हैं और उनको किसी कोने में बैठने को कह दिया जाता है। कहने की जरूरत नहीं कि ये लघुकथाएं, हमें हमारे समय का प्रतिबिंब, बगैर किसी लाग-लपेट के दिखाने में सक्षम हैं। *

पुस्तक: हवा में बनती हैं नई जगहें (लघुकथा संग्रह), **लेखिका:** अलका सोनी, **मूल्य:** 150 रुपए, **प्रकाशक:** मेधा बुक्स, दिल्ली

प्राचीन-अनूठी बादामी गुफाएं

कर्नाटक राज्य के उत्तरी भाग के बागलकोट जिले में ऐतिहासिक बादामी नगर में स्थित हैं बादामी गुफाएं और मंदिर। इन गुफाओं का न केवल पौराणिक बल्कि ऐतिहासिक महत्व भी है। इन गुफाओं में मौजूद प्रतिमाएं चालुक्य वंश की शिल्पकला का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जो इतिहासप्रेमी पर्यटकों को मोहित कर लेती हैं।

{ दर्शनीय स्थल / जगत नारायण भारद्वाज }

अगर आप इतिहासप्रेमी पर्यटक हैं तो आपको एक बार कर्नाटक के बादामी नगर में स्थित प्राचीन गुफाओं और मंदिरों को जरूर देखना चाहिए। इन गुफा-मंदिरों में मौजूद प्रतिमाएं, छठी-सातवीं सदी में यहां शासन करने वाले चालुक्य शासकों के दौर की उत्कृष्ट शिल्प कला का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार कर्नाटक का बादामी नगर, महाभारतकालीन असुर राजा वातापी की राजधानी हुआ करती थी। पौराणिक काल के विंध्याचल पर्वत के दक्षिण में स्थित इस दंडकवन में अगस्त्य ऋषि और लोपामुद्रा वास किया करते थे। यहीं पर वातापी और इलविल दो भाई अपनी संजीवनी विद्या का दुरुपयोग करके ऋषि-मुनियों को तंग करते और कई बार उन्हें मार भी देते थे। एक बार अंजाने में इन दोनों भाइयों ने अगस्त्य ऋषि पर भी आघात करना चाहा। इस पर अगस्त्य ऋषि ने अपने तपोबल से वातापी को उदरस्थ कर नष्ट कर दिया और दंडक वन को उनके अत्याचारों से मुक्त कर दिया। तभी से इसे अगस्त्य तीर्थ भी कहा जाने लगा।

ऐतिहासिक महत्ता: सन 547-757 तक बादामी नगर, चालुक्यवंशी राजाओं की राजधानी रही है। यहां के पराक्रमी सम्राट पुलकेशिन द्वितीय ने ही उत्तर भारत के सम्राट हर्षवर्धन को पराजित किया था। इसी सम्राट पुलकेशिन के पुत्रों मंगलेश और कीर्तिवर्मन ने यहां के पर्वतों को काटकर गुफा और मंदिरों का निर्माण कराया था। वही प्राचीन गुफाएं और मंदिर, बादामी गुफाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मौजूद हैं प्राचीन प्रतिमाएं: यहां प्रमुख रूप से चार गुफाएं हैं। इन 4 गुफाओं में पहली गुफा हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित है, जिसे नटराज गुफा कहा जाता है। इसमें अर्धनारीश्वर, हरिहर रूप और 18 भुजाओं वाली नटराज की प्रतिमा है, जो देश में अन्यत्र नहीं है। नटराज की मूल प्रतिमा, जो तमिलनाडु के चिदंबरम में है, में भी 16 हाथ हैं। इस गुफा में एक मूर्ति ऐसी भी है, जिसे एक ओर से ढंकने पर हाथी और एक ओर से ढंकने पर नंदी की प्रतिमा दिखाई देती है। इन गुफाओं की एक विशेषता यह भी है कि यहां पर प्रतिमाओं के साथ ही शिल्पकारों के नामों को भी उकेरकर उन्हें अमर कर दिया गया है।

एक अन्य गुफा भगवान विष्णु को समर्पित है। इस गुफा में भूदेवी के साथ वराह और वामन अवतार की विशाल प्रतिमाएं बनी हैं। समुद्रमंथन, कृष्णलीला और अन्य पौराणिक आख्यानों के दृश्य भी बहुत सुंदरता से इस गुफा में उकेरे गए हैं। गुफाओं के विशाल स्तंभों पर सुंदर और महीन कलात्मक कारीगरी की गई है। ये कलाकारी इतनी मोहक है कि जिन्हें स्थानीय साड़ियों के निर्माता भी ऐसी डिजाइन की साड़ियां बनवाते हैं। गुफा की ऊपरी छत पर ऐसे स्वास्तिक बने हैं, जिनका प्रारंभ और अंत का भी आभास नहीं होता है। आपने शेषनाग पर शयन करते भगवान विष्णु की प्रतिमा तो देखी होगी लेकिन शेषनाग पर विराजित भगवान विष्णु की प्रतिमा आप यहीं पर देख पाएंगे। यहां 578 ईसवी में निर्मित कन्नड़ लिपि में लिखा गया एक शिलालेख भी है। इसमें मंगलेश द्वारा एक गांव को दान में दिए जाने का उल्लेख है। तीसरी गुफा भी भगवान शिव को समर्पित की गई है। जबकि चौथी गुफा में जैन तीर्थंकरों की विशाल मूर्तियां बनी हैं। इसमें भगवान वर्धमान, महावीर, पार्श्वनाथ तथा बाहुबली की सुंदर प्रतिमाएं सुशोभित हैं।

कुछ ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं कि चालुक्य वंश के शासकों ने पहले शैव, वैष्णव और फिर जैन पंथ को अपनाया। इसीलिए इन गुफाओं में इनकी प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं। यह प्राचीन काल में धार्मिक समन्वय का सशक्त उदाहरण है। शाम के समय में इन गुफाओं की शोभा देखते ही बनती है। इन गुफाओं के कारण ही बादामी नगर विश्व में प्रसिद्ध हुई है। यह स्थल पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है।

अन्य दर्शनीय स्थल: इन बादामी गुफाओं के नीचे अगस्त्य तालाब के दाहिनी ओर आगे चलने पर खंडहरों के प्रतीक आज भी मिलते हैं। यहां पर अनेक चलचित्रों का फिल्मांकन भी हुआ है। गुफाओं के नीचे आने पर अगस्त्य तालाब के किनारे प्राचीन सूर्य मंदिर है। तालाब के एक कोने पर भगवान शिव को समर्पित द्रविड़ शैली में बना भूतनाथ मंदिर समूह है, जिसे 7वीं सदी में बादामी चालुक्यों द्वारा बनवाया गया था। यहां 12वीं सदी में कल्याणी चालुक्यों द्वारा मल्लिकार्जुन मंदिर समूह का निर्माण कराया गया था। भगवान विष्णु और शिव को समर्पित यह मंदिर भी पर्यटकों को आकर्षित करता है। इनके निर्माण की शिल्पकला में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। पास में ही एक भैरव मंदिर है, जिसकी चट्टान पर कई पौराणिक चित्र उकेरे गए हैं। यहीं से चार किमी की दूरी पर बादामी चालुक्यों की कुलदेवी बनशंकरी देवी का मंदिर है, जिसे मां पार्वती का अवतार माना जाता है। इसकी स्थापना अगस्त्य ऋषि ने की थी। मंदिर के पास में ही दर्शनार्थियों के ठहरने की व्यवस्था भी है। यहां गर्मी के मौसम को छोड़कर पूरे वर्ष में कभी भी जाया जा सकता है। *

{ सेल्फ इंप्रूवमेंट / अतुल मलिकराम }

फील्ड कोई भी हो, बतौर टीम लीडर काम करने की ख्वाहिश प्राय: सभी को होती है। लेकिन टीम लीडर के रूप में सक्सेसफुल होने के लिए अपने काम में एक्सपर्ट होने के साथ ही आपके अंदर कुछ लीडरशिप क्वालिटीज का होना भी जरूरी है। क्या हैं वो क्वालिटीज, जानिए।

ये क्वालिटीज बनाएंगी सक्सेसफुल टीम लीडर

महात्मा गांधी की इस उक्ति 'आप खुद के भीतर वह बदलाव लाएं, जो आप लोगों में देखना चाहते हैं।' को अच्छे लीडरशिप के सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। एक अच्छे लीडर में कुछ मूलभूत गुणों का होना आवश्यक है। आत्मविश्वास, संचार कौशल, दूरदर्शिता, निर्णय क्षमता, ईमानदारी आदि गुणों की अपेक्षा एक टीम लीडर से की जाती है। एक अच्छा लीडर ऐसे निर्णय लेता है, जो उसकी टीम या संगठन के हित में हो।

पॉजिटिव एटिट्यूड: एक टीम लीडर के रूप में जरूरी है कि आप अपना एटिट्यूड हमेशा पॉजिटिव रखें। आप अपने टीम मेंबर्स को आगे बढ़ने में हमेशा मदद करें। आपके डिसिजंस ऐसे होने चाहिए, जिसे आपकी टीम बेझिझक स्वीकार करती हो। एक अच्छे टीम लीडर के रूप में आपको अपनी टीम की हर जरूरत की जानकारी होनी चाहिए। साथ ही टीम मेंबर्स के हार्ड वर्क और अचीवमेंट्स के लिए उन्हें रिवॉर्ड भी जरूर देना चाहिए। एक टीम लीडर के रूप में विश्वास रखें कि आपकी टीम मजबूत है, यहां हर कोई अपनी भूमिका अच्छे से निभाना जानता है और अपना टार्गेट अचीव करने की क्षमता रखता है।

बढ़ाएं टीम मेंबर्स का हौसला: एक अच्छे टीम लीडर को चाहिए कि वह अपने टीम मेंबर्स को, अपने कुलीग्स को हमेशा मोटिवेट करता रहे। आगे बढ़कर नेतृत्व करने का गुण या सार्थक नेतृत्व हमेशा ही लीडर की परछाई के समान साथ-साथ चलता है। एक लीडर के रूप में आपका पॉजिटिव बिहेवियर और लीडरशिप टीम मेंबर्स को अधिक गहराई से और पूरी तरह से बदलने की ताकत रखता है। यदि आप चाहते हैं कि आपकी टीम अधिक सकारात्मक हो, तो सबसे पहले आपको सकारात्मक रवैया अपनाना होगा। यदि आप चाहते हैं कि टीम मेंबर्स अपने काम को बिना किसी गलती के बेहतरी से पूरा करें, तो आपको उनके ऊपर विश्वास रखना होगा और उनके भीतर आत्मविश्वास जगाना होगा। उनकी कम्युनिकेशन स्किल्स और अपीयरेंस आदि पर विशेष तौर पर ध्यान दें और बेझिझक उन्हें सही सलाह देते रहें। साथ ही आपको चाहिए कि आप उनकी मदद करें और उनका हौसला बढ़ाते रहें।

स्वयं बनें उदाहरण: अगर आप चाहते हैं कि आपके टीम मेंबर्स समय से कार्यस्थल पर आएं और अपना हर काम समय पर पूरा करें, तो पहले आपको स्वयं समय से पहले या समय से वर्कप्लेस पर आने की आदत डालनी चाहिए। आप उन्हें वक्त की पाबंदी के फायदे बताएं। अपना और अपनी सफलता का उदाहरण देकर उन्हें समझाएं। याद रखिए, सफल नेतृत्व के तीन सबसे कारगर सिद्धांत हैं- उदाहरण, उदाहरण और उदाहरण। आप अपनी टीम के लिए कितना बड़ा और प्रभावी उदाहरण बन सकते हैं या पेश कर सकते हैं, यह आप पर निर्भर करता है। लेकिन यकीन मानिए, आपके ऐसा करने का आपकी टीम पर बहुत पॉजिटिव इफेक्ट पड़ेगा। *

{ चिंता / के.पी. सिंह }

विलुप्ति की कगार पर सोन चिरैया

सोन चिरैया यानी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, भारत के समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा रही है। यह पक्षी मुख्य रूप से राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात के कच्छ क्षेत्र में और कर्नाटक व आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में पाए जाते हैं। कभी बहुतायत में पाई जाने वाली सोन चिरैया धीरे-धीरे लुप्त होने की कगार पर है।

अनोखी शारीरिक संरचना: सोन चिरैया का वैज्ञानिक नाम 'अर्देवोटिस निग्रिसेप्स' है। इसे हिंदी में सोन चिरैया, मराठी में माढोक और राजस्थानी में गोडावण कहते हैं। सोन चिरैया लगभग एक मीटर ऊंची होती है, इनमें नर का वजन आमतौर पर 11 से 15 किलो होता है, जबकि मादा 4 से 7 किलो की ही होती है। इसके सिर के ऊपरी भाग में एक काली टोपी नुमा संरचना होती है। गर्दन स्पष्ट रूप से भूरे रंग की होती है। यह मानसून के दौरान प्रजनन करती है। नर सोन चिरैया में प्रजनन काल के दौरान गले पर पाउच जैसी संरचना उभर आती है। नर, मादा को बुलाने के लिए अपने पाउच से एक विशेष किस्म की आवाज निकालता है। सोन चिरैया सुबह और शाम के समय सक्रिय रहती है। दिन के समय यह प्रायः निष्क्रिय रहती है।

अत्यंत संकटग्रस्त: चिंताजनक बात यह है कि गीतों, कविताओं और लोककथाओं की शान रही भारत की यह खास चिड़िया लुप्त होने की कगार पर पहुंच गई है। आईयूसीएन की रेड डाटा लिस्ट में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड को अत्यंत संकटग्रस्त प्रजाति की श्रेणी में रखा गया है।

लुप्त होने के कारण: सोन चिरैया के लुप्त होने के अनेक कारण हैं। पहले इसका आवास घास के मैदानों और खेतों के बीच होता था, लेकिन अब घास के मैदान और खेत कम होने से इसके आवास की समस्या पैदा हो गई है। एक कारण यह भी है कि यह साल में केवल एक अंडा देती है और उसे भी जमीन पर देती है, जिसे आमतौर पर कुत्तों, लोमड़ियों या अन्य पशुओं द्वारा नष्ट कर दिया जाता है। अपनी कमजोर दृष्टि के कारण ये कांटों, बिजली के तारों आदि में फंसकर मरे जाते हैं।

संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयास: सोन चिरैया के संरक्षण के लिए आईयूसीएन, केंद्र एवं राज्यों द्वारा विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। मसलन, इसके शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। जैसलमेर के सुधासरी और रामदेवरा में इन्हें सुरक्षित आवासों में रखकर प्रजनन करवाया जाता है। इन सबके अलावा एनजीओ, वैज्ञानिक और स्थानीय समुदाय के लोग भी सोन चिरैया के संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं। *

{ लाइफस्टाइल / शिखर चंद जैन }

बेहतर शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छी नींद बहुत जरूरी है। इसीलिए दुनिया भर में लोग अच्छी नींद के लिए तरह-तरह की तरकीबें अपनाते हैं।

अच्छी नींद के लिए अजब-गजब उपाय

कई शोध ऐसे हो चुके हैं, जिनमें अच्छी नींद को मानसिक और शारीरिक सेहत के लिए बेहद जरूरी बताया गया है। अच्छी नींद के लिए चिकित्साविज्ञानी तरह-तरह के उपाय भी बताते रहे हैं, जैसे अंधेरे कमरे में सोना, ठंडे बेडरूम में सोना, बेड टाइम पर स्क्रीन से दूर रहना, रेग्युलर एक्सरसाइज करना आदि। लेकिन इन सब से हटकर दुनिया के विभिन्न देशों में लोग अच्छी नींद के लिए कुछ अलग तरह के उपायों को भी अपनाते हैं।

सोने से पहले पैर धोना: चीन में अच्छी, लंबी और गहरी नींद के लिए लोग गर्म पानी में पैर डुबोते हैं और एक्सफोलिएशन भी करते हैं। इससे हाइजीन के साथ-साथ ब्लड सर्कुलेशन भी दुरुस्त होता है और ब्लड वेसल्स भी ब्लॉक नहीं होती हैं। पैर गर्म रहने और बॉडी टेंपरेचर कम होने से नींद जल्दी आती है। यहां कुछ लोग फुट मसाज और स्पा ट्रीटमेंट लेते हैं। अरोमाथेरेपी लेते हैं और पैरों में गरम तौलिया भी लपेटते हैं। इससे उनकी दिन भर की थकान दूर हो जाती है और सुकून की नींद आती है।

कपल्स लेते हैं स्लीप डाइवोर्स: अमेरिका में अच्छी नींद के लिए कपल्स स्लीप डाइवोर्स का आइडिया अपनाते हैं। इसके तहत पार्टनर अलग-अलग बेड पर सोते हैं। कई कपल तो अलग-अलग रूम में भी सोते हैं ताकि नींद में खलल न पड़े।

पेट्स के साथ सोना: एक सर्वे के मुताबिक कनाडा के डॉग ऑनर्स में से कम से कम 75 फीसदी लोग अपने कुत्ते के साथ बेडरूम में सोना पसंद करते हैं, जबकि बिल्ली पालने वालों में से कम से कम 50 फीसदी लोग बिल्लियों को साथ लेकर सोते हैं। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूके में कम से कम 65 फीसदी लोग अपने पालतू के साथ सोते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि अपने पालतू पशुओं के साथ सोने से अच्छी और बेफिक्र नींद आती है। यूनिवर्सिटी आफ टोरंटो में इवोल्यूशनरी एंथ्रोपोलॉजी के एसोसिएट प्रोफेसर डेविड सैमसंग कहते हैं कि डॉग का साथ इंसान को सुरक्षा का एहसास देता है। यही वजह है कि अपने पेट डॉग के साथ लोग निश्चिंत और बेफिक्र होकर सोते हैं।

तकिए के नीचे डॉल रखकर सोना: ग्वाटेमाला में पुरानी परंपरा है कि लोग अपने तकिए के नीचे एक छोटी-सी डॉल रखकर सोते हैं, जिसका नाम है- वरी डॉल। मान्यता है कि वरी डॉल लोगों की चिंता या डर को दूर करती है। इससे उन्हें काफी कंफर्ट महसूस होता है। कई मनोवैज्ञानिकों और स्लीप एक्सपर्ट्स द्वारा किए गए अध्ययन में पता चला है कि इन वरी डॉल्स की उपस्थिति से लोगों का एंजायटी लेवल काफी कम हो जाता है, जिससे उन्हें अच्छी नींद आती है। *

हिंदी और साउथ फिल्म इंडस्ट्री में मैडी के नाम से पॉपुलर एक्टर आर. माधवन की रोमांटिक फिल्म 'आप जैसा कोई' 11 जुलाई को रिलीज हो रही है। इस अलग-सी रोमांटिक फिल्म को उन्होंने क्यों एक्सेप्ट किया? इसके लिए उन्हें कैसी तैयारियां करनी पड़ीं? इस फिल्म, करियर और पर्सनल लाइफ से जुड़ी बातें आर. माधवन से।

मनोरंजन का कामयाब जरिया बन गया है ओटीटी: आर. माधवन

{ मुलाकात / पूजा सामंत }

आर. माधवन हिंदी और साउथ फिल्म इंडस्ट्री में समान रूप से एक्टिव हैं। वे एक अच्छे एक्टर होने के साथ-साथ सहज, मिलनसार और डाउन टु अर्थ इंसान भी हैं। वर्ष 2001 में रिलीज 'रहना है तेरे दिल में' बतौर लीड एक्टर माधवन की पहली हिंदी फिल्म थी। हमेशा चुनिंदा फिल्मों में नजर आने वाले माधवन, नेटफ्लिक्स की रोमांटिक फिल्म 'आप जैसा कोई' में फातिमा सना शेख के साथ नजर आएंगे। इस फिल्म को निर्देशित किया है विवेक सोनी ने। पेश है आर. माधवन से इस फिल्म और करियर पर हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

आपकी फिल्म 'आप जैसा कोई' रिलीज हो रही है। इस फिल्म के बारे में कुछ बताइए। इस रोमांटिक फिल्म को करने के पीछे क्या वजह रही?

लेखक-निर्देशक विवेक सोनी ने जब मुझे फिल्म की कहानी सुनाई तो मुझे इस प्रेम कहानी का अनोखापन बहुत पसंद आया। प्रेम के रिश्ते में लड़का-लड़की दोनों एक ही लेवल पर होते हैं। न लड़का खुद को ग्रेट समझे, न लड़की। यह इक्कीसवीं सदी की प्रेम कहानी है। बिल्कुल इस दौर की कहानी। प्रेम के रिश्ते में लड़की अगर प्यार की पहल करे तो क्या बुराई है? फिल्म का हीरो यानी मैं संस्कृत सिखाने वाला प्रोफेसर हूं। मेरी शादी 40 की उम्र तक नहीं होती है। मेट्रीमोनियल वेबसाइट पर मेरी मुलाकात एक युवती (फातिमा सना शेख) से होती है, जो काफी मॉडर्न खयालात की है। उसे मेरे घर के लोग मना कर देते हैं। फिर क्या होता है? क्या हमारा रिश्ता आगे बढ़ता है? इसके इर्द-गिर्द फिल्म की कहानी घूमती है। मुझे यह प्लॉट, मेरा किरदार (श्रीरेणु) सब बहुत पसंद आया।

श्रीरेणु का किरदार निभाने के लिए आपको किस तरह की तैयारियां करनी पड़ीं?

मेरी रियल एज 55 साल है। लेकिन फिल्म में मेरा किरदार श्रीरेणु 40 के आस-पास का है। मुझे अपनी उम्र से 15 वर्ष कम का दिखना था। इसके लिए मैंने जिम जाकर काफी वर्कआउट किया। स्क्रीन पर उम्र कम दिखे इसलिए मुझे अपनी दाढ़ी हटानी पड़ी, क्लीन शेव रखनी पड़ी। हालांकि मैं अपना दाढ़ी वाला लुक बदलना नहीं चाहता था। मेरे लिए यह बड़ा बदलाव था। फिल्म में मेरे कैरेक्टर की साइकोलॉजी को समझना था। कुल मिलाकर मुझे इस कैरेक्टर के लिए खुद को तैयार करने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

'आप जैसा कोई' के एक दृश्य में आर. माधवन और फातिमा सना शेख

इस फिल्म में अधेड़ उम्र के पुरुष का प्यार दिखाया गया है। आपकी नजर में क्या समाज ऐसे प्यार को स्वीकार करता है?

समाज का क्या है, वो तो हर कंडीशन में कुछ न कुछ कहता ही रहता है। दंपति में उम्र का फासला ज्यादा हो तो दिक्कत, उम्र एक सी हो दोनों की तो भी कहने वाले कहते रहेंगे, पति-पत्नी की हाइट में बहुत फर्क हो तो भी कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना। लेकिन मेरा मानना है कि अब सामाजिक परिवर्तन हो रहा है, स्वीकार्यता बढ़ रही है।

सुना है, 'आप जैसा कोई' फिल्म की शूटिंग के दौरान आप जमशेदपुर स्थित अपने पुश्तैनी घर भी गए थे, कैसा रहा वहां जाने का अनुभव?

जमशेदपुर में मेरा जन्म हुआ था। कई वर्षों तक मेरा वहां जाना नहीं हुआ। जब इस फिल्म की शूटिंग उस इलाके (हुगली) में हो रही थी तो मैं टाइम निकालकर अपने पुश्तैनी घर जमशेदपुर गया। बचपन में जो घर मुझे बहुत बड़ा लगता था, इस बार छोटा नजर आया। जो लोग मेरे पड़ोस में थे, अब उनमें से शायद ही कोई वहां था। मैंने वहां आइसक्रीम, स्वीट्स को एंज्वॉय किया। अपने पुराने घर की ढेर सारी यादों को साथ लेकर मैं वापस आया।

आपने टीवी से डेब्यू किया था। फिर आपने साउथ, हिंदी, अंग्रेजी फिल्मों में काम किया। और अब 'आप जैसा कोई' फिल्म से आप ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एंट्री कर रहे हैं। इस बारे में क्या कहना चाहेंगे आप?

सभी जानते हैं, ओटीटी आज के दौर में मनोरंजन का बेहद कामयाब जरिया है। यहां फिल्में भी आती हैं, डॉक्यूमेंटरी सीरीज और वेब सीरीज भी। अब कलाकारों के लिए यह मायने नहीं रखता कि वे किस प्लेटफॉर्म के लिए काम करते हैं। अच्छे मौके आए तो बॉलीवुड क्या, हॉलीवुड क्या, ओटीटी क्या और टीवी क्या? किस माध्यम के लिए मैं कंटेंट बना रहा हूं यह मेकर को अहसास हो, तो वो उस माध्यम का लाभ उठाकर उम्दा कंटेंट दे सकता है। बहरहाल, मैं इस वर्ष बड़े परदे यानी सिनेमा के लिए भी काम कर रहा हूं। 'दे दे प्यार दे 2' और 'धुरंधर' मेरी दो फिल्में इसी वर्ष रिलीज होंगी। *

● मैं ये सब नहीं कर सकता

आर. माधवन इतनी अच्छी एक्टिंग कर लेते हैं लेकिन क्या कुछ ऐसे काम भी हैं, जो वह नहीं कर सकते? पूछने पर वह बताते हैं, 'मैं फूडी हूं, इसलिए डाइटिंग नहीं कर सकता। मुझे आंकड़ों से नफरत है। मैं अपने फाइनेंसियल मैटर्स को मैनेज नहीं कर सकता, मेरी पत्नी सरिता यह काम संभालती हैं। सरिता ने मुझे क्रेडिट कार्ड दे रखा है। मैं अपने जरूरी खर्चे क्रेडिट कार्ड से चला लेता हूं। कैश खोने का डर रहता है। मेरे जितने भी बैंक अकाउंट्स हैं, वो सरिता के नाम पर हैं। मेरी हमसफर के अलावा वो मेरी कैशियर, बैंक मैनेजर भी है।'